बरन संकल्प मासिक समाचार पत्र

RNI No. : JHAHIN / 2014 / 58757 (स्थापित : 1993) मई 2019, वर्ष–5, अंक–6

सम्पादक एवं प्रकाशक बरन संकल्प
सचिव, बरन संकल्प (एक निवंधित न्यास)
वालेश्वर प्रसाद, कस्तुरबा नगर, लुबी सर्कुलर रोड, धनबाद–826001. ☎ 9431725382, 7717762093

सह–सम्पादक – **डा भुवनेश्वर मोदी**, पतरातु
☎ 9431534443

मुद्रक : बिपिन कुमार चौरसिया
प्रेस : बिपिन प्रिंटींग प्रेस, कतरास रोड, धनबाद.
☎ (0326) 2308009

स्वामित्व : **वरन संकल्प (एक निवंधित न्यास)**
प्रकाशन स्थान:कस्तुरबा नगर, लुबी सर्कुलर रोड, धनबाद 826001 (झारखण्ड) E-mail : baransankalp@gmail.com

वरन संकल्प (एक निवंधित न्यास)

अध्यक्ष : कृष्णचंद्र अशान्त, शिव मंदिर चौक, न्यू कॉलोनी, जगजीवन नगर, धनबाद ☎ 2200243, 9934341558

उपाध्यक्ष : विनल कुमार बरनवाल, खमरिया, (भदोही) ☎ 9794862972, 9415865614

कोषाध्यक्ष : बिशेश्वर प्रसाद, **MIG/B-18**, हाउसिंग कॉलोनी, धनबाद, मो0 नं0 – 7294032449

विषय सूची

			पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	वालेश्वर प्रसाद	2–3
2.	बेचैन जिन्दगी	डॉ. भुवनेश्वर मोदी	8–11
3.	लोकसभा चुनाव परिदृश्य	हरिश्चन्द्र प्र. 'आर्य'	12–13
4.	जैसा बोओगे वैसा पाओगे		14–16
5.	बेटी बचाओ	राजकुमार 'राज'	16
6.	सहानुभूति की अनुभूति	डॉ. भुवनेश्वर मोदी	17–19
7.	क्या हो रहा है	प्रताप नारायण बरनवाल	19
8.	हमारी भू (B.H.U.) यात्रा	अरविन्द कु. बरनवाल	20–21
9.	जय हो भारतभूमि	डॉ. विनय कुमार 'विष्णुपुरी'	22
10.	शत्–शत् नमन	मोहन प्र. बरनवाल	22
11.	धर्म का बीज		23
12.	वर–वधू		25–28
13.	यात्रा		29–30
14.	हेल्दी रेसिपी		35

वरन संकल्प न्यास के न्यासी परिषद के अन्य सदस्य

श्री अनन्त नारायण लाल, धनबाद – 9431377604, श्री पी0 एल0 बरनवाल, धनबाद – 9431187661, श्री विष्णु प्र0 गुप्ता, झरिया – 9431162609, श्री बी0 एल0 बरनवाल, धनबाद – 9431315440, श्री सुनील कश्यप, धनबाद – 9431125696, श्री अमरेन्द्र नारायण, धनबाद – 9835553936, डा0 महेन्द्र प्रसाद, धनबाद – 9431730154, श्री मधुकर प्रसाद, धनबाद – 9334014556, श्री सदानन्द प्र0 बरनवाल, जैना मोड़ – 9430756496, श्री जगदेव प्र0 बरनवाल, जमशेदपुर – 0657–2290174, श्री राधेश जी बरनवाल, मिर्जापुर – 9936119805, श्री ओमनन्दन प्रसाद, धनबाद – 9431191440, श्री अजित कुमार बरनवाल, आसनसोल – 9002726608, श्री महेश्वर मोदी – 9572112499, श्री साधुशरण प्रसाद, 9470570757

शुल्क "बरन संकल्प" के 01910100925352, UCO Bank, IFSC - UCBA0000191 के A/c में जमा करें। न्यासी शुल्क 1200/–

प्रकाशित सभी लेखों एवं नकल कर भेजे गये रचनाओं का उत्तरदायित्व रचयिताओं का है। सभी प्रकार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र धनबाद होगा। 'बरन–संकल्प' में प्रकाशित रचनाओं के विचार संबंधित रचनाकारों के है, 'बरन–संकल्प' के नहीं –सम्पादक

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

लोकतंत्र का महापर्व आम चुनाव या लोकसभा का चुनाव चल रहा है। मतदाता अपने मौलिक अधिकार का प्रयोग करते हुए अपने–अपने क्षेत्रीय सांसदों का चुनाव कर रहे हैं। इन्हीं सांसदों के हाथों मतदाओं के साथ–साथ देश का भाग्य सुरक्षित होगा। सरकार तो किसी एक ही गुट की बनेगी – एनडीए या यूपीए या महागठबंधन की।

''कोउ नृप होहि हमहि का हानी। चेरी छाड़िकि होय बरानी।।'' देश की जनता में आज भी यही भाव है। फिर भी शिक्षा के विकास के साथ–साथ आम जनता में बहुत हद तक राजनीतिक चेतना आ चुकी है। अब जनता अपना हित–अहित सब कुछ समझने लगी है। उसने पूर्ण बहुमत वाली सरकार को भी देखा है और बैशाखी पर खड़ी मिली–जुली सरकार को भी। पाँच साल तक जीने वाली सरकार को भी और दो वर्ष से भी कम समय तक टिके रहने वाली सरकार को भी। पाँच वर्ष के अन्दर दो–दो बार चुनाव को देखा है और आपातकाल में लगभग सात वर्ष तक घिसटाते रहनेवाली मनमानी तानाशाही सरकार को भी। ऐसे में जनता को स्वयं फैसला करना है या उसका फैसला देखना है कि वह मजबूत सरकार चाहती है या मजबूर सरकार। मजबूत सरकार का अर्थ है कि पाँच वर्ष तक के कार्यकाल को मोदीजी के गुण–दोष को परखते हुए पुनः उन्हें अवसर दे या फिर उनके अवगुणों के बखान सुनकर और बरगला कर अनेक दलों में बँटी खिचड़ी परोस मजबूर सरकार का दामन थामें जो कमी भी चुनाव थोपने और भारी खर्च देश पर लादकर चुनाव कराने को बाध्य हो जाय।

यहाँ दो व्यक्तित्व है – एक ऐसे कर्मठ व्यक्ति का जिसने अपना सर्वश्व देश को समर्पित कर दिया है। उसके पास देश–विदेश का अनुभव है। देश के साथ–साथ विदेशों में अपनी छवि है। जो ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ है। जिसकी अपनी पार्टी और जनता में अच्छी पकड़ है। जिसमें देश के प्रति त्याग, तपस्या और मनोबल है। जो समय के नब्ज को पहचानता है और देश के दुश्मन को मुँह तोड़ जवाब देने की क्षमता है। जिसकी बातों में वजन है और भरोसेमन्द है। जो सबका साथ और सबका विकास चाहता है। ऐसे व्यक्तित्व के हाथ में देश सौंपने में कोई हानि नहीं है। और ये हैं – मोदीजी।

दूसरी तरफ अपना–अपना क्षेत्रीय राग अलापने वाले स्वार्थियों का झुण्ड है जिन पर कई घोटालों का आरोप और जिनके आका जेल तक जा चुके हैं। जो मात्र अल्पसंख्यक वोट के खातिर आतंकवादियों की भी आरती उतारने को तैयार हैं। कल होकर अगर इनकी सरकार बनती है और उन्हें देश के उन दुश्मनों को आँख दिखाने की जरुरत पड़ेगी तो इनके पास क्या बिल्ली की आँख होगी या चूहों की ? जनता इस भाव को समझे। फिर भी ये अनुभवहीन दूसरों की बैशाखी पर चलनेवाले देश को क्या एक सबल और मजबूत सरकार दे पायेंगे। जनता झाँसे में न आये। व्यक्तिगत समस्या को जनता राष्ट्रीय समस्या न बनने दे और अपना मत सोच समझकर प्रयोग करे। राहुल उनके दूसरे विकल्प है।

अब शक्ति उनकी मुठ्ठी नें है और परिणान 23 मई की प्रतीक्षा कर रहा है। देखना है कि देश की जनता कितनी समझदारी दिखाती है। उनका वोट देश की ताकत होगी।

।। जय हिन्द ।।

बालेश्वर प्रसाद
सम्पादक

Scanned by CamScanner

बरनवाल भवन न्यास, पटना की 13वीं आम सभा चुनाव दिनांक 07 अप्रैल, 2019 को सम्पन्न

बरनवाल भवन न्यास, कदमकुआँ, पटना की 13वी आम सभा–सह–चुनाव दिनांक 07 अप्रैल, 2019 (रविवार) को बरनवाल भवन, पटना में की गई जिसकी अध्यक्षता न्यास के अध्यक्ष श्री जयशकर प्रसाद जी ने की।

13वीं आमसभा चुनाव का निर्णय दिनांक 17 फरवरी 2019 की कार्यकारिणी बैठक में ली गई थी एवं चुनाव के सफल संचालन के लिए तीन चुनाव पदाधिकारी सर्वश्री प्रो. योगेन्द्र प्रसाद, अशोक कुमार बरनवाल एवं अम्बिका प्रसाद जी का मनोनयन किया गया। दिनांक 16 मार्च, 2019 को प्रो. योगेन्द्र प्रसाद जी द्वारा प्राप्त पत्र के बाद प्रो. योगेन्द्र प्रसाद जी के स्थान पर दिनांक 17 मार्च 2019 की कार्यकारिणी की आकस्मिक बैठक में श्री बालमुकुन्द प्रसाद जी को चुनाव पदाधिकारी बनाया गया था।

सभी न्यासी सदस्यों को आम सभा चुनाव की सूचना एवं चुनाव उम्मीदवारी का चुनाव–निर्देश युक्त प्रपत्र भेजा गया। इसके साथ ही 'प्रतिनिधि नामित करने' हेतु पत्र सभी संस्थानाओं को भेजा गया।

आमसभा कार्यक्रम :– (1) 11.00 दीप प्रज्वलन, माल्यार्पण, स्वागत भाषण (2) 11.30 बारहवीं आम सभा कार्यवाही की सम्पुष्टि (3) 12.00 सचिव प्रतिवेदन (4) 12.30 कोषाध्यक्ष द्वारा अंकेक्षित आय–व्यय का प्रस्तुतीकरण (5) 01.00 न्यासियों के विचार (6) 02.30 अध्यक्षीय भाषण व आम सभा का समापन (7) 02.45 भोजनावकाश (8) 03.00 ग्यारह कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव प्रारम्भ।

सर्वप्रथम श्री बिनोद कुमार सम्राट द्वारा अध्यक्ष श्री जयशंकर प्रसाद, सचिव, डॉ. रंजीत कुमार एवं कोषाध्यक्ष श्री अनिल कुमार गुप्ता को मंचासीन कराया गया। इसके बाद भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार जी बरनवाल को मंचासीन कराया गया। तदोपरान्त बरनवाल भवन न्यास के पूर्व अध्यक्ष श्री नृपेन्द्र नाथ गुप्त, डॉ. जवाहर लाल और श्री प्रदीप कुमार बरनवाल को मंच पर बैठने का अनुरोध किया गया। पूर्व अध्यक्ष में प्रो. योगेन्द्र प्रसाद ई. कार्तिक प्रसाद एवं श्री मुरारी प्रसाद जी की अनुपस्थिति मिली।

इसके बाद मंच के सामने की 'विशिष्ट कुर्सी' पर बारी–बारी से तीनों चुनाव पदाधिकारी सर्वश्री अशोक कुमार बरनवाल, अम्बिका प्रसाद, बालमुकुन्द प्रसाद, स्थायी कार्यकारिणी सदस्य सर्वश्री विजय कुमार, प्रमोद कुमार, नारायण प्रसाद, जगदीश लाल, मिथिलेश कुमार, कार्यकारिणी सदस्य सर्वश्री लाला प्रसाद आर्य, रवि कुमार, अमरनाथ, पंकज कुमार, अनिल कुमार, कृष्ण कुमार बरनवाल, अनूप कुमार भरतिया, गोपाल प्रसाद व श्रीमती अंजूरानी को ससम्मान बैठाया गया। इसके साथ ही उपस्थित सभी संस्थापक न्यासी डॉ. सर्वदेव गुप्त, श्री जगदीश प्रसाद, श्री घनश्याम दास गुप्त, श्री रमेश चन्द्र, डा. हर्ष कुमार व श्रीमती शिवरानी बरनवाल को भी आरक्षित कुर्सी पर बैठा गया। सभी विशिष्ट जनों के लिए नाम युक्त विशिष्ट कुर्सी की व्यवस्था की गई थी।

❖ इसके बाद श्री सुनील कुमार बरनवाल एवं श्री संदीप कुमार जी द्वारा सभी विशिष्ट जनों को बैज लगाया गया।

❖ पूर्वाह्न 11.30 बजे दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन व तदोपरान्त महाराजा अहिबरन जी का माल्यार्पण मंचासीन लोग द्वारा किया गया। सभी विशिष्ट जनों व न्यासियों द्वारा महाराजा अहिबरन जी को पुष्पांजली दी गई।

Scanned by CamScanner

❖ सभी सम्मानित सज्जनों को श्रीमती नीलम बरनवाल एवं श्रीमती सुनीता बरनवाल ने अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। इसके साथ ही राँची से आए श्री ईश्वर चन्द्रा एवं दिल्ली से आए श्री राजेन्द्र कुमार जी को भी सम्मानित किया गया।

❖ दोपहर 12.00 बजे सचिव डॉ. रंजीत कुमार जी द्वारा पिछली 12वीं आम सभा (दिनांक 16 अप्रैल, 2017) की कार्यवाही पढ़ी गई और उपस्थित न्यासी सदस्यों द्वारा सम्पुष्टि की गई।

❖ दोपहर 12.30 बजे सचिव डॉ. रंजीत कुमार जी ने अपने कार्यकाल की मुख्य बिन्दुओं की जानकारी 'सचिव प्रतिवेदन' द्वारा दी। सचिव प्रतिवेदन की प्रति सभी न्यासियों के बीच वितरण किया गया।

डॉ. रंजीत कुमार जी ने अपनी निम्न उपलब्धियों और विकास का उल्लेख किया :-

1. प्रथम तल सभागार के सीलिंग को P.O.P. से सुसज्जित किया गया।
2. किचेन के एजबेस्ट्स छत को हटा ढलाई करना एवं उसके ऊपर के छत को पुनः ढलाई उपरान्त एक मिनी हॉल का निर्माण किया गया जिसका उपयोग लाइब्रेरी या स्टोर के रुप में किया जा सकता है।
3. द्वितीय तल के तीन कमरों का आधुनिकीकरण कर डिलक्स बनाया गया।
4. प्रथम तल व द्वितीय तल के खिड़कियों में अल्युमिनियम जाली लगाया गया।
5. तीन A.C. लिया गया।
6. एक 49 इंच T.V. एवं एक मोबाईल लिया गया।
7. प्रथम तल के सभी तैल चित्रों को भूतल स्थित दान शिलापट के ऊपर लगाया गया।
8. 'अधिकारियों के नाम-कार्यकाल सूची' व सूचना पट को आकर्षक रुप दिया गया।
9. सत्र 2012-13 से सत्र 2015-16 तक की लम्बित आयकर समस्याओं का समाधान किया गया।
10. दिनांक 13 अगस्त 2017 एवं 12 अगस्त 2018 को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में क्रमशः 68 एवं 78 रक्तदाताओं द्वारा रक्तदान किया गया।
11. दिनांक 20 अगस्त, 2017 को नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर का आयोजन कर 326 व्यक्तियों का नि:शुल्क नेत्र जाँच, चश्मा वितरण, दवा दी गई एवं 30 जरुरतमंद व निर्धन व्यक्तियों का नि:शुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन डॉ. शरत कुमार द्वारा करवाया गया।
12. कार्यकारिणी बैठक 15 अगस्त 2018 के निर्णयानुसार हिसुआ की मेधावी छात्रा सुश्री ऋतिका राज को तीस हजार रुपये का चेक द्वारा आर्थिक सहायता दी गई।
13. दिनांक 07 मई 2017 की बैठक के निर्णयानुसार बरनवाल भवन में एक लौकर (बॉक्स) युक्त एक स्टील आलमारी की व्यवस्था की गई ताकि सभी सामाजिक संस्थाओं के सभी कागजात को सुरक्षित रुप मे बरनवाल भवन में रखा जाय।
14. दिनांक 07 मई की बैठक के अनुसार आवश्यकता को देखते हुए एक नए कर्मचारी श्री कमलेश कुमार की नियुक्ति 01 अप्रैल 2018 से की गई, जो सपरिवार भवन में रह रहा है।
15. बरनवाल भवन न्यास के उपलब्ध सारे कागजात को नये तरीके से 36 प्रकार के फाईलों एवं 20 प्रकार के पंजी में सूचीबद्ध किया गया है ताकि कागजात संरक्षित और व्यवस्थित रहे।
16. बिहार प्रदेश राजनीतिक प्रतिनिधि सम्मेलन जो 20 जनवरी 2019 को बापू सभागार में आयोजित किया गया था, में बरनवाल भवन की महत्वपूर्ण और सक्रिय भूमिका रही।

❖ इसके अतिरिक्त सचिव डॉ. रंजीत कुमार जी ने कहा कि दिनांक 17 फरवरी, 2019 की कार्यकारिणी बैठक के निर्णयानुसार कोई भी व्यक्ति लगातार दो बार ही पदाधिकारी (अध्यक्ष/सचिव/कोषाध्यक्ष में कोई एक या दो) बन सकते हैं, उनके दो बार कोई भी पदाधिकारी का पद ग्रहण करने के बाद तीन टर्म (लगभग 6 वर्षों) बाद ही वे पदाधिकारी पद के उम्मीदवार होंगे, को आम सभा में रखा गया एवं मंजूरी ली गई।

❖ बरनवाल भवन न्यास के संविधान में संशोधन की आवश्यकता की बात को बतलाते हुए

Scanned by CamScanner

डॉ. रंजीत कुमार जी ने कहा कि वर्त्तमान संविधान अनुसार कोई न्यासी अपने जीवनकाल में सिर्फ अपने पुत्र–पुत्री को ही सदा के लिए न्यासी का स्थानान्तरण कर सकते है, परंतु इसमें पति, पत्नी, भाई व बहन जैसे सम्बन्धियों को भी आजीवन न्यासी बनने का अधिकार मिलना चाहिए। इस पर चर्चा उपरान्त आम सभा में इस नियम का संशोधन कर निर्णय लिया गया कि कोई भी न्यासी अपने जीवनकाल में सिर्फ अपने पुत्र/पुत्री/भाई/बहन/पत्नी/पति/बहु को आजीवन के लिए न्यासी का स्थानान्तरण कर सकेंगे परन्तु नये स्थानान्तरित को कम से कम दो वर्षो बाद ही पुनः स्थानान्तरित किया जा सकेगा।

❖ डॉ. कुमार जी, कमल किशोर बरनवाल जी के केस उठाने सम्बन्धित निम्न शर्त्तो की जानकारी दी–

1. स्थायी कार्यकारिणी सदस्यों का रद्द करते हुए, उन्हें नए रुप संरक्षक का स्थान दिया जाए, जिसका प्रथम नियमावली/विलेख में उल्लेख है।
2. वित्तीय अनियमितता करने वाले अभियुक्त को दंड का प्रावधान हो।
3. न्यासी का नाम जीवन काल में न बदली जाए।
4. न्यासी की संख्या बढ़ाई जाए।

श्री कमल किशोर बरनवाल जी के कोर्ट केस उठाने की शर्त्तो पर आम सभा सदस्यों के बीच कोई भी निर्णय नहीं लिया गया।

❖ बरनवाल भवन सचिव डॉ. रंजीत कुमार ने कहा कि सूचना आदान–प्रदान के लिए कार्यकारिणी एवं न्यासी का अलग–अलग What'sapp ग्रुप बनाया गया है जिसके द्वारा समस्त सूचनाएं दी जाती हैं। उन्होंने कहा कि बरनवाल भवन के प्रत्येक आरक्षण/निःशुल्क/सामाजिक बैठक हेतु आरक्षण की जानकारी सभी कार्यकारिणी सदस्यों को What'sapp पर अविलम्ब उपलब्ध की जाती रही है।

❖ डॉ. रंजीत कुमार जी ने सुझाव दिया कि कमरों की कमी के कारण तृतीय तल पर एजबेस्टस युक्त हॉल और कमरो के निर्माण की जरुरत हैं एवं सभी कमरों की डिलक्स बनाने, प्रथम तल हॉल में चार झुमर लगाने की जरुरत को बताया, जिस पर आम सभा की स्वीकृति मिली।

❖ उन्होंने 2017–19 सत्र में न्यायमूर्ति रामनारायण लाल, गिरिजा बरनवाल, उपेन्द्र प्रसाद, अनुया लाल, किशोर कुमार जी के निधन पर शोक जताया एवं उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

❖ अपने 'सचिव प्रतिवेदन' के माध्यम से अध्यक्ष जयशंकर प्रसाद, कोषाध्यक्ष श्री अनिल कुमार गुप्ता के अतिरिक्त सभी कार्यकारिणी सदस्यों का आभार व्यक्त किया एवं त्रुटियों–कमी के लिए क्षमा याचना की। इसके साथ ही प्रबंधक श्री जयप्रकाश वर्मा के विशिष्ट योगदान की सराहना की।

उन्होंने 13वीं आम चुनाव में निर्वाचित होने वाले सदस्य एवं पदाधिकारियों की अग्रिम बधाई देते हुए कहा कि नए सत्र में उर्जावान लोग चुन कर आएँ जो बरनवाल भवन को विकास के मार्ग पर ले जाएँ ताकि बरनवाल भवन उत्कृष्टता की एक पहचान बना रहे।

❖ 01.00 बजे अपराह्न कोषाध्यक्ष श्री अनिल कुमार गुप्ता ने सत्र 2017–19 का आय–व्यय पढ़ा। उन्होंने जानकारी दी कि इन दो वर्षो में खर्च के बाद न्यास की सम्पत्ति में 12,59,138/– रुपये की बढ़ोत्तरी हुई है। उन्होंने सभी न्यासी सदस्यों को जानकारी दी की क्रय/खर्च के कागजात बरनवाल भवन में सुरक्षित है, जिसे कोई भी न्यासी अवलोकन कर सकते हैं।

❖ अपराह्न 01.30 बजे 'न्यासियों के विचार' विषय के अन्तर्गत विचार व्यक्त करने वाले न्यासी के नाम मांगे गए एवं फिर बारी–बारी से उन्हें मंच पर बुलाया गया।

1. सबसे पहले श्री अम्बिका प्रसाद जी ने कहा कि आमदनी में से 20% राशि को अलग रखा जाए, जिससे सिर्फ कार्यकारिणी की सहमति से जरुरतमंद की मदद की जाय।

Scanned by CamScanner

2. श्री अशोक कुमार बरनवाल, बिहारशरीफ ने कहा कि वित्तीय अनियमितता करने वाले के लिए दंड का अवश्य प्रावधान होना चाहिए।

3. श्री अरुण कुमार, शाहगंज ने तीनो पदाधिकारियों की उपलब्धि की सराहना की और स्थायी कार्यकारिणी के अधिकारी को पूर्वत् रहने की बात कही

4. श्री घनश्याम दास गुप्त जी ने कहा कि कंकड़बाग में एक भूखण्ड लिया जाय एवं एक अन्य भवन का निर्माण किए जाए व नए न्यासी बनाए जाएँ।

5. श्री विजय कृष्ण प्रकाश, हाजीपुर ने वर्तमान के उपलब्धियों को सराहना की परन्तु इसके साथ ही उन्होंने कहा कि चुनाव में कुछ चेहरे बार–बार खड़े होते हैं, जिससे नए लोगों को मौका नहीं मिल पाता है। इसलिए नये लोगों को आगे बढ़ाने के लिए बार–बार आने वाले चेहरों को नये लोगों को सहयोग कर खड़ा नहीं होना चाहिए।

6. डॉ. बच्चू लाल, गया ने सबसे पहले मंत्रोचारण कर लोगों को मंत्र–मुग्ध कर दिया। उन्होने कहा कि सामाजिक संस्था में सिर्फ मधुर बातें ही चलती है। अपने वरिष्ठों को आदर–सम्मान देने की बात कहते हुए कहा कि कुछ लोग अपनी ऊँची आवाज से अपनी मनमानी करवा लेते हैं और सभ्य लोगों की धीमी आवाज जायज होते हुए भी दबा दी जाती है। उन्होंने सलाह दिया कि जब किसी बात पर मतान्तर हो, कार्यकारिणी में गुप्त मतदान कराकर निर्णय लिया जाना आवश्यक है। इस पर आम सभा में सहमति व्यक्त की गई।

7. प्रो. विष्णु नन्दन गुप्ता, हाजीपुर ने अपने शब्दो में कहा कि सदैव अपने पीढ़ियों को याद करने चाहिए। उन्होंने बरनवाल भवन की उपलब्धि की सराहना की।

8. श्री सुरेन्द्र प्रसाद बरनवाल, कोडरमा ने भवन की दूसरी ईकाई बनाकर रकम को Invest करने की बात कही एवं लोगों द्वारा न्यूनतम सहयोग राशि पर भवन उपलब्ध करवाने का सुझाव दिया।

9. श्री कृष्णा प्रसाद बरनवाल धनबाद ने न्यासियों की उपस्थिति से असंतोष जताया। उन्होंने कहा कि जो भी प्रत्यासी चुनाव में खड़े है, उनका परिचय हो एवं जो सदस्य वर्तमान में हैं और पुनः प्रत्यासी है, उनके सम्बन्ध में सचिव सहयोग/असहयोग की जानकारी दें।

10. श्री अखिलेश कुमार जी ने कहा कि सुश्री ऋतिका राज को तीस हजार रुपया का सहयोग दिया गया, परन्तु चेक उसके पिता के नाम से दिया गया, जो अनुचित है।

11. श्री अमरनाथ (छेदी) ने निम्न सुझाव दिए :–

(क) पहली कार्यकारिणी बैठक में ही पूरे वर्ष के कार्यक्रमों की सूची एवं उस विभाग के Head का बंटवारा किया जाए।

(ख) न्यासी और गैर न्यासी का अलग–अलग आरक्षण शुल्क।

(ग) भवन आरक्षण में दो न्यासी सदस्यों के हस्ताक्षर की अनिवार्यता को समाप्त कर किसी भी सामाजिक लोगों के हस्ताक्षर का प्रावधान हो।

(घ) नए दो पद 'उपाध्यक्ष' और 'सह–सचिव' सृजन हो।

(ड.) निगरानी समिति बनाई जाए एवं इसकी सहमति और सम्पुष्टि के बाद ही खर्च किए जाए।

12. श्री भारत भूषण प्रसाद जी ने नए पद उपाध्यक्ष एवं सह–सचिव पद के सृजन का विरोध करते हुए कहे कि ये पुरानी पद्धति सिर्फ लोगों को सुशोभित करने की होती है। अमेरिका व अन्य कुछ संगठनों का उदाहरण देते हुए कहा कि जहाँ भी ऐसे पदों को हटाकर, विभागों का बँटवारा कर, अलग–अलग सम्बन्धित अधिकारी बनाया गया, वहाँ विकास तीव्र गति से हुई है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि एक नया ट्रस्ट बनाकर, सोसाईटी एक्ट से रजिस्टर्ड कराकर 12 A (आयकर) से निबंधित कर एक उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसी रकम को लिय जा सकते हैं, जिससे अधिकार और आयकर की समस्या से बचा जा सकता है। उन्होंने नवादा का उदाहरण देकर कहा कि वहाँ कि सभी आय को जन–कल्याण न्यास के तहत लिए जाते हैं, जिस पर आयकर की छुट का प्रावधान है।

Scanned by CamScanner

13. श्री श्रवण कुमार ने कहा कि कमिटी के अन्दर सभी मिल जुलकर कार्य करे।

14. श्री अनुप भरतीया ने कहा कि (क) न्यासी बढ़ाया जाए (ख) भवन में स्टाफ रखने और हटाने का अधिकार, पदाधिकारी को हो (ग) जो न्यासी पटना से बाहर रहते हों, उसके लिए कूरियर से वोट देने का अधिकार का रास्ता प्रशस्त किया जाए।

15. श्री शिव कुमार बरनवाल ने आजीवन न्यासी स्थानान्तरित के लिए पुत्र/पुत्री/बहु/भाई/बहन /पति/पत्नी को अधिकार देने का सुझाव दिया। इसके साथ ही बरनवाल कल्याण न्यास का चुनाव कराने के लिए श्री अरुण कुमार जी से अनुरोध किया जिस पर बरनवाल कल्याण न्यास सचिव श्री अरुण कुमार जी ने 12 मई 2019 को इसका चुनाव कराने की तिथि बताई।

16. श्री प्रदीप कुमार बरनवाल ने आज की सभी व्यवस्था की तारिफ करते हुए कहा कि बरनवाल भवन का विकास उत्तरोत्तर हो रहा है एवं जो भी त्रुटि दिखाई पड़ रही है उसे दूर भी किया जा रहा है।

अध्यक्ष श्री जयशंकर प्रसाद ने कहा कि विलम्ब हो जाने के कारण न्यासियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का जवाब दिया जाना समयाभाव के कारण संभव नहीं है।

अध्यक्ष श्री जयशंकर प्रसाद ने अफसोस जताते हुए कहा कि समयाभाव के कारण आम सभा में सभी प्रत्यासी को परिचय कार्य नहीं हो पाया। इसके बाद अध्यक्ष ने सभी का धन्यवाद कर आम सभा समाप्त की और कहा कि जिन बिन्दुओं पर चर्चा अधुरी रह गई, उसे कृपया नई कार्यकारिणी विचार करें।

- लोगों को भोजनावकाश दिया गया।
- अपराह्न 03.15 बजे सर्वश्री अशोक कुमार बरनाल, अम्बिका प्रसाद एवं बालमुकुन्द प्रसाद जी के द्वारा गुप्त मतदान प्रक्रिया प्रारंभ हुई जो 05.15 तक सम्पन्न हुई।
- आम सभा हस्ताक्षर पुस्तिका में कुल 184 न्यासी सदस्यों का हस्ताक्षर किये परन्तु कुल मतदान मात्र 173 हुए जिसमें सात मत रद्द किये गए। गिनती समाप्त कर रात्रि 8 बजे ग्यारह सदस्यों को विजयी की घोषणा की गई। सभी 22 प्रत्याशियों को निम्न मत प्राप्त हुए :-

(1) श्री अमरननाथ 'छेदी' 130 मत (2) श्री संजय कुमार बरनवाल 129 मत (3) श्री प्रदीप कुमार बरनवाल 129 मत (4) श्री लाला प्रसाद आर्य 126 मत (5) श्री रवि कुमार 'मुन्ना' 115 मत (6) श्री अनूप कुमार भरतिया 106 मत (7) डॉ. जवाहर लाल 101 मत (8) श्री पंकज कुमार बरनवाल 101 मत (9) श्रीमती आरती प्रसाद 98 मत (10) श्री अनिल कुमार 89 मत (11) श्री बिनोद कुमार सम्राट 89 मत

नव निर्वाचित उपर्युक्त ग्यारह सदस्यो, बारह स्थायी कार्यकारिणी में से सात सदस्यों व बिहार प्रदेश प्रतिनिधि सदस्य डॉ. बच्चू लाल जी एवं प्रबुद्ध महिला समिति प्रतिनिधि सदस्य श्रीमती अलका बबली बरनवाल सहित कुल बीस कार्यकारिणी सदस्यों की बैठक में सर्वसम्मति से अध्यक्ष के रुप में श्री अम्बिका प्रसाद, सचिव के रुप में श्री अमरनाथ एवं कोषाध्यक्ष के रुप में श्री संजय कुमार बरनवाल का चुनाव हुआ।

इसके बाद उपस्थित सभी कार्यकारिणी सदस्यों की आन्तरिक व्यवस्था को सुदृढ़ व सुचारु करने के लिए सर्वसम्मति से श्री रवि कुमार 'मुन्ना' को उपाध्यक्ष एवं श्री प्रदीप कुमार बरनवाल को सह-सचिव बनाया गया। सभी निर्वाचित बंधुओ को माला पहना बधाई दी गई।

इस कार्यक्रम में प्रबुद्ध महिला सदस्यों की सराहनीय भूमिका मिली। सभी लोगों के लिए सुबह नास्ता, अमूल लस्सी, दोपहर भोजन, शाम में पोहा-चना, रात्रि में भोजन के साथ-साथ चाय की दिनभर व्यवस्था की गई थी। प्रत्येक न्यासी का स्वागत गुलाब के फूल से किया गया एवं बैज दिया गया था।

जयशंकर प्रसाद — अध्यक्ष

डॉ. रंजीत कुमार — सचिव

Scanned by CamScanner

उपन्यास

बेचैन जिन्दगी

भाग – 16

इस उपन्यास के पाठकों को स्मरण होगा कि इसके पिछले भाग अर्थात भाग 15 में मैंने त्रिभुवन बाबू के प्रयास से निर्मला के पुत्र विनोद और पुत्री उर्मिला के विवाह सम्पन्न कराने में उनके विशेष योगदान की विशद चर्चा थी। इस बीच लगभग डेढ़–दो वर्ष बीत जाने के उपरान्त अचानक निर्मला को बेटी की एक खुशखबरी सुनने को मिली। वह खुशखबरी क्या थी, उसकी चर्चा मैं थोड़ा और बाद में करूँगा, इसके पूर्व कुछ और बातों की भी चर्चा कर लेना उचित समझ रहा हूँ। अब आगे देखिए क्या होता है –

बेटे–बेटियों को जन्म देकर लावारिस जैसा छोड़ देना ही माता–पिता का उत्तरदायित्व समाप्त नहीं होता है, बल्कि उनका यह भी परम कर्त्तव्य होता है उन्हें पारिवारिक जीवन में ढलने योग्य बनाना। कहा जाता है कि तीस–पैंतीस वर्ष की उम्र के पूर्व युवा–युवतियों की बुद्धि उतनी परिपक्व नहीं हो पाती है जितनी हम उमीद कर बैठते हैं। यही कारण है कि बहुओं के घर आ जाने के बाद सास–ससुर जब उनसे ताल–मेल नहीं बैठा पाते हैं तो उनमें धीरे–धीरे कटुता इतनी बढ़ती चली जाती है कि असामयिक ही परिवार बिखर जाता है जिसका सर्वाधिक दुःख वृद्धावस्था में माता–पिता को ही भुगतना पड़ता है। किसी माता–पिता को अगर एक से अधिक पुत्र होते हैं तो यह दुःख और भयंकर होता है, क्योंकि देखा–देखी बहुएँ एक–दूसरे की नुक्ता चीनी तो करती हैं पर सास– ससुर के प्रति कोई समर्पित होकर सेवा करने को तैयार नहीं होती हैं। सासुओं में भी एक बहुत बड़ी कमजोरी यह होती है कि वे जितना प्यार और ममता अपनी बेटियों पर दिखलाती हैं उतनी बहुओं पर नहीं। चूँकि बहुएँ पराये घर की होती है, अतः सासुओं को वे उतना प्यार और स्नेह देना पसंद नहीं करती हैं। और आज की दहेज के युग में तो यह फासला तेजी से फैलता चला जा रहा है जिसे रोक पाना अति कठिन हो रहा है। सासुएँ जो पुत्रवती होती हैं वे इस अभिमान से ग्रसित रहती हैं बेटो को जन्म हमने दिया, कष्ट उठाकर पालन–पोषण किया, उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने की जिम्मेवारी उठायी और जब सुख पाने का समय आया तो ये महारानियां अपने–अपने पतियों की मालकिन बन बैठी। जबकि इसके विपरीत बहुएं ये मान बैठती है कि आपने अपने–अपने बेटों को दहेज लेकर एक तरह से हमारे माँ–बाप के हाथों में उन्हें बेच डाली। ऐसे में ये लड़के बिकाऊ बैल की तरह हमारी मुट्ठी में आ गए। फिर इन पर हमारा अधिकार नहीं तो भला सासुओं का कैसे हो सकता है। और इसी खींचतान में बेचारे बेटे चक्की के गेहूँ की तरह पीसते चले जाते हैं। आज समाज में बेटे–बहुओं की आत्महत्या अथवा तलाक के मूल कारण ये ही हैं जिन्हें देख–सुनकर भी हम अनदेखा कर रहे हैं और इन्हीं कारणों से हम अंत में दरिद्रता या ऋण ग्रसता के शिकार हो रहे हैं। त्रिभुवन बाबू की पत्नी सोनमती देवी की ना समझी के कारण उनका परिवार बिखरा जिसका अनुचित लाभ छोटे बेटी दामाद उठाने को ललायित हुए और अन्ततः उन्हें गृह त्याग करना पड़ा। इस कटु सत्य को वे भूल नहीं पा रहे थे और जब–जब उनका ध्यान उस ओर चला जाता, वे बेचैन हो जाते, उन्हें कई दिनों तक शान्ति नहीं मिलती।

पूष का महीना था दिसम्बर के समाप्त होते ही नव वर्ष का आगमन हो चुका था साथ ही शीत का प्रकोप बढ़ जाने से रात बड़ी कष्टदायिनी हो गई थी। तीन–चार बजते–बजते पछुवा ठंडी बयार बहने लगती थी और घरों के अन्दर ही दुबक कर लोग रह जाते थे। ऐसे में गरीबों और बूढ़े के लिए जीना दुभर हो रहा था। गरीबों पर तो प्रकृति विशेष रुप से जुल्म ढाती ही है। शीत ऋतु में जहाँ ठिठुरा कर मारती हैं वही गर्मी में लोग लू से तपकर मरते हैं और बरसात में विशेषकर बाढ़ वाले प्रदेशों में अनेक गाँव नदियों की धारा में समा जाते हैं जहाँ अपार धन– जन की हानि होती है। अर्थात् हर तरह से प्राकृतिक मार गरीब ही झेलने को मजबूर होते हैं। इस शीत के प्रकोप में त्रिभुवन बाबू का ध्यान भटक कर अनायास पत्नी की ओर चला जाता। फिर यह सोचकर मन फेर लेते कि वह अकेले तो घर में होगी नहीं, जरुर छोटी बेटी के पास ही होगी, फिर इसकी

Scanned by CamScanner

चिन्ता मैं क्यों करूँ ? इसलिए मन के बोझ को किसी के पास साझा नहीं करते।

शाम हो गई थी। संध्या प्रार्थना और नाम ध्यान के बाद उन्होंने निर्मला से आग्रह किया – ''बेटी ! आज मुझे बहुत ठंड महसूस हो रही है, तनिक अंगिठी सुलगाओ न। सुनकर आज्ञाकारिणी निर्मला तुरंत एक लोहे की कड़ाही भूंसा, गोयठे के टुकड़े और कुछ झाड़ियाँ बटोर कर ले आयी और सुलगा दी। आग जलती देख बच्चे भी आकर घेर लिये। सबों को राहत मिलने लगी। इसी बीच विनोद की पत्नी श्यामली सामने से गुजरते हुए जब रसोईघर में घुसने लगी तो त्रिभुवन बाबू ने चुटकी लेते हुए कहा – ''विनोदिनी मैडम ! प्लीज हमें चाय पिला सकती है ?'' इस पर श्यामली पीछे मुड़कर थोड़ा तुनक कर बोली – ''नाना जी ! आप बराबर मुझे इनके नाम से जोड़कर क्यों पुकारते है, जबकि आप जानते हैं कि मेरा नाम श्यामली है। इस पर त्रिभुवन बाबू हँसकर बोले – आप समझी नहीं मैडम, विनोद का स्त्रीलिंग विनोदिनी होता है कि नहीं। आप पढ़ी–लिखी मैडम हैं। ऐसे में आपका नाम लेकर क्यों पुकारूँ ? आप कहेंगी कि कैसे नानाजी हैं जो मुझे मैडम कहना नहीं चाहते। मै भी भला आपको अपमानित कैसे करूँ ? आप हुई इस घर की मैडम। अतः इस गुस्ताखी को माफ करें। मैं आपको विनोदिनी मैडम ही कहूँगा। इतना कहते ही वहाँ निर्मला सहित सभी बच्चे ठहाका लगाकर हँस दिये। इस पर बेचारी चुप्पी साधकर रह गई। वस्तुतः अपने मजाकिया स्वभाव से ग्रसित होकर ही त्रिभुवन बाबू श्यामली की तुनुक मिजाजी स्वभाव को जानना चाहते थे।

इस बीच चाय आ गई। जब सभी पी ही रहे थे कि विनोद आ गया। श्यामली ने उसे भी लाकर चाय दी। वह भीतर से ही रहकर इसका स्वाद ली। अभी तक उसकी झिझक दूर नही हुई थी और सबके सामने विनोद से अधिक नहीं बतियाती थी। इसी बीच त्रिभुवन बाबू का ध्यान बच्चों पर गया। उन्होंने विनोद से कहा – ''विनोद! ठंडा भयंकर पड़ रहा है। कल तेरी छुट्टी का दिन है। चलकर बहू और उर्मिला के लिए दो शॉल और बच्चों के लिए गरम कपड़े और जूते–मौजे ले लेते हैं। तुम भी चाहो तो गरम कपड़े ले लो। पता नहीं ससुराल में उर्मिला कैसे रह रही होगी ? तुम मेरी ओर से उसे शॉल ले जाकर पहुँचा देना, साथ मे कुछ सौगात लेते जाना। इस पर निर्मला बोली मेरे और बहू के पास तो गरम कपड़े है ही। हम दोनो के लिए खरीदने की क्या जरुरत है ? इस पर त्रिभुवन बाबू धीरे से बोले – होने को तो उर्मिला के पास भी होंगे, पर सास की दिलदारी की परीक्षा तो ऐसे ही समय होती है कि बहू–बेटी को वह समान समझती है या कम–बेशी। इस पर निर्मला चुप लगा दी, विनोद भी कुछ नहीं बोला। विनोद के उठकर भीतर चले जाने के बाद कुछ देर तक संयुक्त परिवार में सास–धर्म के विषय में त्रिभुवन बाबू निर्मला को नसीहत देते रहे। इसी बीच उन्होंने उसकी फूआ की भी गलतियों की चर्चा कर दी। इस पर निर्मला ने पूछा – ''क्या फूफा ! फूआ की याद आपको कभी नहीं सताती हैं ? सुन कर त्रिभुवन बाबू चुप लगा दिए, कुछ नहीं बोले।

इसके बाद विनोद उठकर भीतर चला गया। अकेले में उसे पाकर श्यामली बोली – ये जी ! देखिए न। नानाजी मुझे हमेशा आपका नाम लेकर ही संबोधित करते हैं, उन्हें मना कर दीजिए ना। मेरा नाम वे नहीं जानते हैं सो तो नहीं। मुझे अच्छा नहीं लगता है। उनके ऐसा कहने से आपके भाई–बहन भी मुझे ऐसा ही कहकर चिढ़ाते हैं।

विनोद – ''इसमें चिढ़ने की कौन–सी बात हुई? नानाजी हैं, इसलिए उन्हें तुम्हारे साथ ठिठोली करने का अधिकार है। इसमें भला तुम दोनों के बीच में क्यों पड़ूँ।''

श्यामली – ''तब मैं उनसे बात नहीं करूँगी?''

विनोद – अच्छा यह तो बताओ, तुम्हें नहल्ले पर दहल्ला मारने आता है ?''

श्यामली – ''वह क्या होता है ?''

विनोद – ''जैसे को तैसा अर्थात् Tit for tat''

श्यामली – ''मैं नहीं समझी।''

विनोद – तब तुम उन्हें पुकारने पर जी नाना सर कहो, नाना न कहो। अब समझ में बात आयी। वो रिटायरमेंट के पूर्व साहब थे। साहब को 'सर' कहा ही जाता है। इसलिए नानाजी को नाना सर या जी नाना सर कहो। देखो वो क्या तुम्हें कहते हैं ? इसी को कहा जाता है जैसे को तैसा। वो तुम्हें विनोदिनी मैडम कहते हैं तुम उन्हें नाना सर कहकर पुकारो। हो गया न नहल्ले पर दहल्ला ?''

Scanned by CamScanner

दूसरे दिन विनोद और उसके तीनों भाई–बहन नानाजी के साथ बाजार गए। त्रिभुवन बाबू के पास पिछले तीन–चार महीने के पेंशन के कुछ पैसे पास बुक में जमा रह गए थे। अतः उन्हें खर्च करने का अवसर मिल गया था। उन्होंने बच्चों के पसंद से स्वेटर, टोपी, जूते–मौजे, श्यामली और उर्मिला के लिए शॉल लेडी माउफलर, जूते–मौजे तथा निर्मला के लिए शॉल, चप्पल और मउफलर खरीदे। विनोद ने केवल जैकेट और टोपी खरीदी। उसके पास जूते–मौजे थे, इसलिए उसने.कुछ और नहीं लिया। शाम होने के पूर्व जब बच्चे उछलते कूदते प्रसन्न मुद्रा में घर में घुसे तो त्रिभुवन बाबू ने श्यामली को पास में बुलाया तो उसने कहा – ''जी नाना सर आ रही हूँ।'' सुनकर थोड़ी देर के लिए वे विचलित हुए। इस पर बच्चों सहित निर्मला और विनोद भी खिलखिला कर हँस पड़े। उन्हें बात समझते देर न लगी। फिर उन्होंने संभलते हुए कहा – ''जरुर इस तोते ने ही अपनी तोती को पढ़ाया है। कोई बात नहीं आज से तुम मेरी मैडम और मैं तेरा 'सर' हो गया। इस पर निर्मला बोली – फूफा ! आपही न इसे सिर पर चढ़ा रहे हैं। उत्तर में उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा – ''यह बात हम दोनों के बीच ही रहने दो। तुम बीच में मत पड़ो। आपसी पारिवारिक हँसी मजाक में यह सब होता ही है। मैं इससे माजक न करुँ तो किससे करुँ ? तुम सास हो, शासन करना जानो, मैं तो इसे प्यार से पुकार कर ही खुश रखूँगा। इसके बाद त्रिभुवन बाबू ने श्यामली के सौगात उसके हाथ में दिये शेष निर्मला के हाथ में सौंपते हुए कहा – शॉल मफलर और चप्पल तुम रख लेना और दूसरा सेट विनोद को देकर उर्मिला के पास भेज देना। और ढ़ाई सौ रुपये और ले लो – उसके आने–जाने तथा सौगात के खर्च के लिए। इस पर निर्मला बोली – ''भाई कमाता है तो बहन के लिए कुछ भी नहीं खर्च करेगा ?'' बहन के पीछे विनोद खर्च करता या नहीं, मेरा इससे कुछ भी वास्ता नहीं, यह उसका धर्म जाने। मेरी नजर मे तो सभी बराबर हैं।'' त्रिभुवन बाबू बोले। इसके बाद निर्मला ने कहा – ''फूफा ! अपने लिए तो कुछ भी नहीं लिए ? फूफा – ''तुम सबों को देने से ही मेरा जाड़ा भाग गया। मैं कहाँ जाता हूँ जो मुझे और अधिक गरम कपड़ों की जरुरत पड़ेगी ?''

निर्मला – ''कपड़े तो मेरे भी पास थे, मेरे लिए लाने की क्या जल्दीबाजी थी ?''

फूफा – ''सबके लिए लाऊँ और तेरे लिए नहीं। जब तक मैं हूँ, तेरा ख्याल रखना मेरा धर्म होता है। इसके बाद विनोद का उत्तरदायित्व बनता है। बुढ़ापे में तो माँ–बाप बेटों के अधीन हो जाते हैं। तब कभी–कभी बेटी भी तुम्हारा ख्याल कर कुछ–कुछ सौगात भेज दिया करेगी। आज वह तुमलोगों से उमीद करती है तो बुढ़ापे में तुम इन लोगों से उमीद करोगी। और हाँ, अगर तेरे पास उपयोग लायक कपड़े नहीं हैं तो कुछ गरीब भिखारियों को भी इस जाड़े के मौसम में दान कर दो। उनका आशीर्वाद भी हमें लेना चाहिए। मेरे सिरहाने में एक पुरानी चादर है, उसे भी किसी गरीब को दे देना।'' अगले रविवार को विनोद उर्मिला के कपड़े और जूते–मौजे लेकर उसके पास चला गया। उन्हें और साथ में मिठाई देते समय अपनी ओर से ढ़ाई सौ रुपये भी दिये। पाकर उर्मिला का चेहरा खिल उठा। उसने भाई के पाँव पखारे और यथोचित सत्कार किया। दूसरे दिन लौटकर उसने सबों को सुसमाचार सुनाया तो सबों को खुशी हुई।

इसके ठीक छः महीने के बाद उर्मिला का फोन आया था जिसकी चर्चा मैंने पिछले भाग के अंतिम पाराग्राफ में की थी। वह फोन क्या था सुनाते हुए उर्मिला बोली – ''हेलो माँ ! मेरी तबियत दो–तीन महीने से ठीक नहीं रहती है। जो कुछ खाती हूँ, उल्टी–उल्टी हो जाती है। कभी–कभी कुछ खाने की इच्छा ही नहीं होती है..... पैर का नस खींचे–खींचे लगता है और शरीर में बहुत कमजोरी महसूस होती है। कुछ काम करने की इच्छा नहीं जगती है.....।'' सुनकर निर्मला को अनुमान लगाने में देर नहीं लगी। फिर भी दबी जुबान से उसने उर्मिला से कुछ और जानकारी ली जो स्त्री जाति में माँ बनने के पूर्व होता है। विश्वास हो गया – उर्मिला छः महीने के अन्दर माँ बनने वाली है। घर की छत पर ग्रीष्म की संध्या प्रार्थना और नाम जाप के बाद जब निर्मला त्रिभुवन बाबू के पास हल्का नाश्ता लेकर गयी तो थमाते हुए बोली – ''फूफा! उर्मिला का फोन आया था। मुझे अनुमान लगा कि शायद वह खाली पाँव नहीं है।'' सुनकर त्रिभुवन बाबू बोले – ''समय पाकर या तो तुम स्वयं

Scanned by CamScanner

जाओ अथवा विनोद को भेजो। कितने दिन हो गये ? इस पर निर्मला बोली – ''लगभग तीन महीने। तो इतना जल्द विनोद को भेजना ठीक नहि रहेगा। और हाँ, उसे बहुत अधिक कहीं घूमने– फिरने मत जाने कहना और संयमित ढंग से खान–पान पर ध्यान रखेगी। ऐसे समय में सतर्कता बहुत जरुरी है।'' इस पर निर्मला बोली – ''फूफा ! हमलोग उसकी शादी में जल्दीबाजी कर दिये। मैं अभी एक–दो वर्ष और रुकना चाहती थी, पर आपके परामर्श को मैं ठुकराना नहि चाहती थी। अभी उसकी उम्र ही क्या हुई है। मुश्किल से बीस पार कर रही है। अब के युग में तो लड़के–लड़कियों की शादी पच्चीस के बाद भी हो रही है।''

यह सुनकर बीच में ही टोकते हुए त्रिभुवन बाबू बोले – ''निर्मला ! तुम्हारी शादी और उर्मिला की शादी के समय की तुलना मैंने कर ली थी। मैं तेरी भी शादी में सम्मिलित हुआ था। तब तेरी उम्र 16–17 की थी। तुम मुझे यह तो बताओ कि पच्चीस तक अर्थात् सात वर्ष देर कर अगर तुम उर्मिला की शादी करती तो इन सात वर्षो में तुम उससे क्या काम लेती। यही न घरेलू काम अर्थात् हँड़िया–बर्त्तन। जिन लड़कियों की शादी पच्चीस के बाद या इसके लगभग होती है, वे या तो पढ़ाई करती हैं या किसी परीक्षा की तैयारी करती हैं या कॉलेज जाने के नाम पर ऐश मौज करती है और अपने–अपने अभिभावकों को ठगती हैं। इस चढ़ती उम्र में कितनी लड़कियाँ बिगड़ जाती हैं, तुम्हें पता है। फिर उनके लिए कम से कम अठाइस तीस वर्ष के लड़के चाहिए। फिर उनके पसंद–ना पसद की भी बात होती है। फिर उम्र बढ़ने के साथ–साथ इस दहेज और भारी–भरकम वैवाहिक खर्च में उनके परिवार वालों पर एक तरह से भारी बोझ या कर्ज का भार भी तो बढ़ता है। इस बीच कई कुँवारी लड़कियाँ रास्ते से भटक जाती हैं या मनचले लड़कों के जाल में फँसकर बर्बाद हो जाती हैं। कई तो असामयिक और गुप्त गर्भपात का भी शिकार होती है। अगर अपनी मर्जी से प्रेम विवाह या अर्न्तजातीय विवाह कर ली तो उनसे उत्पन्न संतान वर्णसंकर (दोगली) होती हैं। फिर यह जरुरी भी नहीं कि उनका प्रेम विवाह सफल ही हो। आज दिल्ली, बंबई जैसे बड़े–बड़े नगरों में विवाह संबंध विच्छेद के हजारों हजार मुकदमें लाइन में लगे हैं। इससे कोर्ट और जज, माता–पिता अलग से परेशान होते हैं। इस प्यार के युग में कई नवयुवक पागलपन का ऐसा शिकार होते हैं कि वे या तो आत्महत्या कर लेते हैं या फिर प्रेमिका की ही जिन्दगी से खेल जाते हैं। यह अवगुण सिर्फ लड़कों में ही नहीं है, लड़कियाँ भी इसके लिए कम जिम्मेदार नहीं होती हैं। ऊँचे–ऊँचे महलो में रहने वाले माता–पिता बेफिक्र रहते हैं और उनके घर में आँख मारने वाले चोर किस तरह सेंधमारी कर उनकी बेटियों की जिन्दगी बर्बाद कर खुद बर्बाद हो जाते हैं, उन्हें क्या पता। और हाँ, अब तो यह बीमारी शहरों से चलकर गाँव–गाँव में घुसती जा रही है। इसलिए गीता में भगवान श्रीकृष्ण और मेरे गुरु श्रीश्री ठाकुर ने अर्न्तजातीय विवाह को बिल्कुल अवैध करार दिया है। क्या ये दोनों महापुरुष गलत थे। इतनी पढ़ी– लिखी तो हो नहीं कि हर बात तुम्हें समझाऊँ। प्रतिदिन समाचार पत्रों में ऐसी कई खबरें देखने को मिलती हैं जिन्हें पढ़कर पागल हुए जैसा लगता है। वोट के लिए सरकारें में भी ऐसा–ऐसा कानून बनाकर रख दी हैं जिनसे समाज और बिगड़ ही रहा है, आधुनिकता के नाम पर क्या बनेगा खाक ? युग बदलने के साथ–साथ मनुष्य तो बदल रहा है पर मनुष्यता मिटती चली जा रही है। निर्मला! मैंने तेरी बेटी के हाव–भाव, बोली–बात, स्वभाव को बहुत बारीकी से देखा तभी तुम्हें उसकी शादी कर देने का परामर्श दिया। सब कुछ तो तुम्हें नहीं कह सकता। वैसे भी माँ होकर सब कुछ समझती हो। पन्द्रह के बाद तो उसके शरीर में विकास हो गया था। अब जाकर देख आओ कि मेरा फैसला उचित था या अनुचित। इधर विनोद भी जवान हो गया है या नहीं, गौर करके कभी देखती हो ?''

सारी बातें सुनकर निर्मला चुप रही। उसने सिर्फ इतना ही कहा – ''आपका फैसला ही तो मेरा फैसला था। चलिए जाने दीजिए जो होता है, ठीक ही होता है।'' इसके बाद क्या हुआ होगा, अगले भाग के लिए प्रतीक्षा करेंगे। तब तक के लिए आज्ञा दीजिए।

क्रमशः जारी .....

शेष अगले अंक में।

डॉ. भुवनेश्वर मोदी
मोदी भवन, ब्लॉक मोड़,
पतरातू, जिला – रामगढ़

Scanned by CamScanner

लोकसभा चुनाव परिदृश्य

भारतीय गणतंत्र पुनः इस वर्ष एक और लोकसभा चुनाव का गवाह बनने जा रहा है। सत्तासीन भाजपा नीत सरकार के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को ही भाजपा ने अगले प्रधानमंत्री के रुप में घोषित किया है। वही विपक्ष का गठबधन या कांग्रेस पार्टी ने किसी का नाम अपनी ओर से भावी प्रधानमंत्री के रुप में नही बताया है। ऐसे में जनमानस के बीच कयास लगाये जा रहे है कि अगला प्रधानमंत्री हमारे देश का कौन होने वाला है। हम ज्योतिष की नजर से देखने का प्रयास करते हैं कि आसन्न चुनाव में क्या स्थिति होने की संभावना है।

श्री नरेन्द्र मोदी का जन्म विवरण इस प्रकार है :–

जन्म तिथि – 17.09.1950
जन्म स्थान – ..... (गुजरात)
जन्म समय – 12.21 अपराह्न

लग्न कुंडली

नवमांश कुंडली

इनकी कुंडली वृश्चिक लग्न की है। कुंडली में कई शुभ योग है। गजकेशरी योग, पंचमहापुरुष योग, रुचक योग, चन्द्रमा का नीचभंग राजयोग। चन्द्रमा नवमेश होकर लग्न में होने से त्रिकोण केन्द्र सम्बन्ध बना रहा है और गुरु भी पंचमेश होकर चतुर्थ भाव में होने से त्रिकोण केन्द्र सम्बन्ध बना रहा है।

इससे पहले कि वर्तमान समय का विचार करें, संक्षिप्त रुप से पिछले लोकसभा चुनाव 2014 की स्थिति का सिहावलोकन करना उचित होगा। इनकी उस समय नवमेश चन्द्रमा में पंचमेश गुरु की अन्तर्दशा का शुभ समय 04.09.2013 से 03.01.2015 तक था। चन्द्रमा नवमेश होकर लग्न में है और गुरु पंचमेश होकर जनता का भाव चतुर्थ में है। दोनों ग्रह कुंडली में योगकारक हैं। उस समय विक्रम संवत् 2072 चल रहा था। उस सम्वत् का राजा और मंत्री दोनों ही चन्द्रमा थे। इन सब के कारणों से श्री नरेन्द्र मोदी ने बहुमत प्राप्त कर केन्द्र की सत्ता में प्रधानमंत्री का पद प्राप्त किया।

वर्तमान परिदृश्य :– चुनाव की परिक्रिया मार्च 2019 से प्रारंभ हो चुकी है। अप्रैल और मई में चुनाव सम्पन्न होकर

Scanned by CamScanner

23 मई 2019 को परिणाम घोषित किये जाने हैं। अभी इनकी कुंडली के अनुसार चन्द्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा 05.08.18 से चल रहा है जो 04.04.2020 तक चलेगा। वृश्चिक लग्न के लिए शुक्र बाधक ग्रह है और कुंडली में द्वितीय भाव और सप्तम भाव का स्वामी होकर मारक प्रभाव भी रखता है। शुक्र वैभव और विलासिता का कारक ग्रह है और दशम भाव में बैठकर जनता का भाव चतुर्थ भाव को देख रहा है। शुक्र का केन्द्रीय प्रभाव लग्न, लग्नेश एवं दशापति चन्द्रमा पर भी है। प्रत्यंतर दशा की बात करें तो शुक्र की अन्तर्दशा में राहू की प्रत्यंतर दशा 11.03.2019 से 10.06.2019 तक रहेगा। राहू पंचम भाव में बैठकर लग्न, लग्नेश मंगल एवं लग्न में स्थित दशापति चन्द्र पर अपनी दृष्टि डाल रहा है। ये स्थितियाँ अनुकूल नहीं कही जा सकती है।

नव सम्वत् 2076 छः अप्रैल 2019 से प्रारंभ हो रहा है। इस सम्वत् का राजा शनि है और मंत्री राज्य के कारक ग्रह सूर्य हैं। इन दोनों ग्रहों में घोर शत्रुता है। परिणामतः भारतीय राजनीति में उथल–पुथल के साथ भाजपा में भी मतान्तर के कारण स्थिति सुगम नहीं रहेगी। ग्रहों के गोचर पर विचार करे तो राहू अधिष्ठित राशि का स्वामी होकर गुरु लग्न में स्थित चन्द्रमा एवं मंगल पर से गोचर कर रहा है। शनि चंद्र से द्वितीय भाव धनु राशि से गोचर करता हुआ उतरती साढ़ेसाती का योग निर्मित कर रहा है। राहू भी चन्द्रमा से अष्टम में मिथुन राशि से 08 मार्च 2019 से गोचर कर रहा है। शनि 29 अप्रैल 2019 से वक्री भी हो रहा है। अतः गोचर की ये स्थितियाँ भी बहुत अनुकूल नहीं है।

<u>वर्ष कुंडली के आधार पर कुछ विशेष :–</u>

अन्तर्दशाति अकारक एवं बाधक ग्रह शुक्र वर्ष कुंडली का लग्नेश होकर षष्ठ भाव में अष्टमेश गुरु के साथ है। वर्ष कुंडली में महादशापति चन्द्रमा राहु अधिष्ठित राशि का स्वामी होकर अष्टम में शनि के साथ है। वर्ष कुंडली के अनुसार केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रहा है। केतु द्वादंशेश मंगल

वर्ष कुंडली

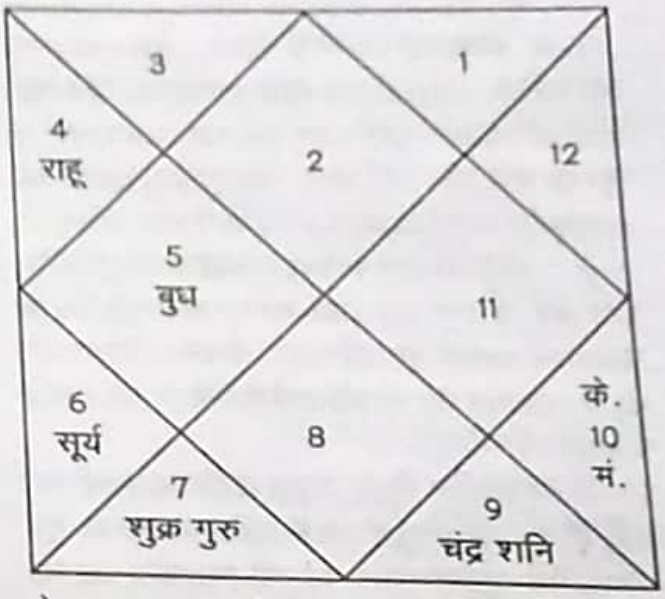

के साथ मकर राशि में नवम भाव में होकर भाग्य भाव को निर्बल कर रहा है। वही वर्ष कुंडली का अन्तर्दशापति शनि अष्टम में महादशापति चन्द्रमा (कुंडली के अनुसार) के साथ है। शनि वर्ण कुंडली में नवमेश और दशमेश भी है। इस प्रकार वर्ष कुंडली का ग्रह दशादि भी अधिक शुभयाचक नहीं है। कुंडली का अन्तर्दशापति बाधक ग्रह शुक्र वर्गोत्तम है परन्तु लग्न कुंडली एवं नवमांश कुंडली में शत्रु राशि सिर में होने के कारण अधिक सुफल प्रदान नहीं कर पायेगा।

निष्कर्षतः होने जा रहे लोकसभा चुनाव में भाजपा को पिछली बार की तरह पूर्ण बहुमत मिलने के योग क्षीण है। चुनाव बाद मई में जो सरकार आयेगी वह गठबंधन की सरकार होगी। भाजपा कितने दलों और सांसदों को समर्थन के लिए राजी कर पायेगा यह चुनाव बाद ही पता लगेगा परन्तु जो सरकार सत्ता में रहती है वह ऐसा समर्थन जुटाने में अधिक सफल होती दिखती है।

(हरिश्चन्द्र प्रसाद "आर्य")
जयप्रकाश नगर, पटना–26

Scanned by CamScanner

जैसा बोओगे वैसा पाओगे

परेशान होने वाला भी नहीं था। दोनों बच्चे अनन्त और अबिका विदेश में बस जाने के बाद मां–पिता फोन करते तभी उनका कुशल समाचार पता चलता, वर्ना वो खुद से कभी फोन नहीं करते, बावजूद डा. दम्पति यही समझते कि शायद वो समय की कमी से फोन नहीं करते।

कबीर के दोनों बच्चे बहुत जल्दी उनसे घुल–मिल गये। रात सभी ने एक साथ खाना खाया। टी.वी. पर समाचार में शहर के बिगड़ते हालात के बारे में दिखाया जा रहा था। सामान्य होने की कोशिशों के बावजूद डा. दम्पति रात–भर सो नहीं सके।

अगले दिन किसी को घर से निकलना नहीं था, कर्फ्यू की वजह से घरेलू नौकर भी नहीं रुक सके थे, पूरा परिवार मिल–जुलकर काम कर रहा था। सास–बहू का आपसी तालमेल कल्पना के विचारों से मेल नहीं खा रहा था फिर भी वो भी उनके घरेलू कामों में मदद करने लगी। एक ही दिन में सारे लोग एक–दूसरे के परिवार से परिचित हो चुके थे। कबीर के दोनों बच्चे बेहद ही तहजीब वाले थे, उन्हें देखकर डा. दम्पति के अपने पोते–पोतियों की याद हो आई, तहजीब में इनके आगे कहीं नहीं ठहरेंगे उनके पोते–पोतियां। तो क्या मुस्लिम परिवार के बच्चे भी इतने सभ्य और शालीन होते है। एक बार में सोच में पड़ गये डा. संदीप। पूरे दो दिन कर्फ्यू लगा रहा। तीसरे दिन तक माहौल थोड़ा शांत होने लगा था तो कर्फ्यू में थोड़ी ढील मिली। डा. दम्पति उसी समय अपने होटल के लिए निकलने के लिए तैयार हो गये।

तब अहमद शाह ने समझाया कि इतनी दूर का सफर बिना रिजर्वेशन के कैसे संभव है, मैं ट्रेन या फ्लाइट के टिकट की व्यवस्था करवा देता हूं तभी आपलोग यहाँ से जाये।

देखिये अहमद जी आपने पहले ही हम पर इतना एहसान किया है अब हमें और शर्मिन्दा मत कीजिए। पर बेहद ही सुलझे और शरीफ अहमद शाह ने उनके फ्लाइट के टिकट की व्यवस्था करवाई और बहुत सारी सौगात देकर उन्हें सुरक्षित पुलिस की संरक्षा में शहर से विदा किया। साथ ही ये भी वादा किया कि वो भी कभी राजस्थान दूर पर आयेंगे। दोनों परिवार में विपरित परिस्थितियों में इतनी घनिष्ठता हो गई थी कि व्यस्त जिन्दगी में से उन लोगों को भी जब समय मिलता तो एक दूसरे का हाल–चाल लेते रहते।

एक दिन कबीर ने डा. संदीप को बताया कि वो राजस्थान बिजनेस के सिलसिले में आने वाला है। तो डा. संदीप ने गजाला, अरीब और शोए को भी साथ लाने को कहा। कबीर को संदीप की बात जंची, बच्चों की भी छुट्टियाँ चल रही थी उन्हे और गजाला को घूमने का मौका कम ही मिलता था। अतः सभी साथ में संदीप के घर पहुंच गये।

दिल से खुश हुए संदीप और अल्पना। बहुत बड़ा बंग्लो था उनका। आवासीय बंग्लो से सटे ही सर्वसुविधा सम्पन्न क्लिनिक था। अल्पना ने घर का एक–एक कमरा गजाला और कबीर को घुमाया। देखो, ये मेरे बेटे अनन्त का कमरा है। अनन्त को बांस और लकड़ी की बनी चीजें बहुत पसन्द हैं। सचमुच अनन्त का कमरा बांस और लकड़ी के फर्निचर और खूबसूरत नक्काशी से सजा हुआ था। पूरा कमरा करीने से सजा हुआ इतना जीवन्त लग रहा था, मानों अभी–अभी कोई उठकर गया हो। अनन्त और अबिका डा. दम्पत्ति के दो बच्चे थे। अनन्त ने तो अमेरिका से ही पढ़ाई की थी और अभी पत्नी और दोनों बच्चों के साथ अमेरिका में ही बस गया था। जैसा कि डा. साहब ने बताया था कि पिछले तीन वर्षो से वह भारत नहीं आया था। अनन्त के कमरे के बाहर की बालकनी ताजे फूलों वाले गमलों से भरी पड़ी थी, तरह–तरह के फूल खिले थे, काले गुलाब ज्यादा आकर्षित कर रहे थे, अल्पना ने बताया अनन्त को फूल बहुत पसन्द है, विशेषकर काले गुलाब। एक माली तो विशेष रुप से अनन्त के फूलों की देखभाल के लिए रखा हुआ है।

वो तो बहुत खुशी की बात है अल्पना जी, कि बेटा सात समुन्द्र पार है, पर आप उसकी पसन्द का इतना

Scanned by CamScanner

ख्याल रखती है।

हाँ भाई जी, इधर उसका ऑफिस वर्क ज्यादा हो गया है, वर्ना वो तो दो साल बीतते–बीतते एक बार जरुर आ जाता था।

और अंबिका, गजाला पूछ बैठी। अंबिका तो कनाडा में रहती है। दोनों भाई–बहन, साल छः महीने में मिलते रहते हैं। अंबिका और दामाद राघव दोनों की पोस्टिंग कनाडा में ही है। दामाद इंजीनियर हैं और अंबिका इंटिरियर डेकोरेटर है, चलिए मैं आप लोगों को अंबिका का कमरा दिखाती हूं।

अंबिका के कमरे की खूबसूरती देखकर आह–वाह कर उठी गजाला। हां अंबिका को डेकोरेशन का शौक शुरु से ही है वो दुनिया के कोने–कोने से डेकोरटिव आइटम लाती और मंगाती रहती है, अल्पना ने बताया।

हो वाकई ऐसा लग रहा है, हम किसी प्राचीन, दर्शनीय स्थल पर आ गये हैं, इस कमरे की साफ–सफाई में तो रोज कई घंटें लग जाते होंगे। हां, भाई जी अंबिका को सफाई बहुत पसंद है। अकेला एक नौकर इस कमरे की साफ–सफाई के लिए ही रखा हमने।

अगले दिन से कबीर दिन भर मार्केटिंग कर लेता, शाम में गजाला और बच्चों के साथ घूमने निकल जाता। डा. दम्पति अति व्यस्तता की वजह से ज्यादा वक्त नहीं दे पाते। सबको राजस्थान बहुत पसद आ रहा था।

घर के पीछे बहुत बड़ा सर्वेन्ट क्वार्टर था, जहां घर और क्लिनिक के नौकर और कम्पाउंडर रहते थे। स्थानीय कर्मचारी रात में चले जाते थे। खाना बनाने वाले खानसामे भी रात मे अपने घर चले जाते। इसका मतलब इतने बड़े घर में डा. दम्पत्ति अकेले ही रहते थे। दिन भर घर में चहल–पहल रहती, नौकर–चाकर का आना–जाना लगा रहता, पर जाने क्यूं आने के दिन से ही गजाला को रात का सन्नाटा खटक रहा था।

फिर भी एक सप्ताह का समय बीत गया, घर से अब्बू अम्मी का लगातार फोन आ रहा था, कि उनलोगों को बच्चों के बिना अच्छा नहीं लग रहा। गजाला ने उन्हें आश्वासन दिया कि दो दिन में वो लोग यहां से निकलने वाले हैं। आपलोग अपना ख्याल रखे। जाने क्यूं गजाला को ऐसा लग रहा था कि इस घर में कुछ गलत हो रहा है। पर क्या खुद उसे भी पता नहीं। डॉक्टर दम्पति उन्हें समय न दे पाने की वजह से शर्मिन्दगी महसूस कर रहे थे, इसलिए उन्होंने क्लिनिक की जिम्मेदारी दूसरे डॉक्टर और कम्पाउंडर को दे एक पूरा दिन उनके साथ गुजारने की सोची थी।

दिन भर घूमने के बाद सभी लोग थक गये थे। आज सभी का साथ में बाहर खाने जाने का प्रोग्राम था। ऐन वक्त पर गजाला ने जाने से मना कर दिया। यूं भी आज उसकी तबियत कुछ ठीक नहीं लग रही थी। कल सफर में निकलना था, इसलिए आज उसने आराम करने का मन बनाया। किसी ने उस पर दबाव नहीं डाला।

ग्यारह से उपर बज रहे थे, पर अभी तक सारे लोग होटल से खाकर नहीं लौटे थे। गजाला को भी नींद नहीं आ रही थी, अचानक उसे प्यास महसूस हुई, देखा तो पीने का पानी खत्म हो चुका था। वो सीढ़ियां उतरकर नीचे गयी, पानी लाने। गजाला ने ध्यान दिया था, बिना इस्तेमाल वाले सभी कमरों में ताला लगा रहता था, पर लॉबी से गुजरते हुए जिस कमरे पर निगाह गई तो आज वो दरवाजा खुला क्या यूं ही सटाया हुआ था। आगे बढ़ते हुए उसने कदम ठिकक गये। ऐसा लगा इस कमरे में कोई है। इतने बड़े घर में वो बिल्कुल अकेली थी, एक बार वो तो डर गई। पर हल्का सा धक्का देने पर दरवाजा अपने आप खुल गया। सहम सी गई गजाला, एक अति बुजुर्ग महिला सामने टूटी खाट पर बैठकर सूखी रोटियां खा रही थी। गल चुके शरीर से उसके चेहरे की एक–एक रेखाएं स्पष्ट नजर आ रही थी। धक से रह गयी गजाला ये कौन हैं ? बुजुर्ग महिला ने भी घबड़ाकर झट से रोटियां अपनी साड़ी में छुपा ली। शायद सूखी रोटियां उनसे खाते नहीं बन रही थी, इसलिए वो एक कटोरे में पानी लेकर रोटिया उसमें भिंगाकर खा रही थीं, घबराहट में उनके हाथ से कटोरे का पानी भी गिर गया।

गजाला ने उन्हें झट से संभाला और बोला कि आज घबड़ाएं नहीं, जल्दी से बताएं कि आप कौन है ? और इस सुखी सम्पन्न परिवार में आपकी ऐसी स्थिति क्यों है ?

मैं सदीप की मां हूं बेटा।

Scanned by CamScanner

क्या ? चीख सी निकल गई गजाला की। उसके सामने अपनी प्रिय सास का चेहरा तैर गया।

संदीप की बहू मुझे बिल्कुल पसंद नहीं करती है, कहती है मैं अनपढ़ गंवार अगर किसी के सामने गई, तो उसकी बेइज्जती होगी, कांपती आवाज में उन्होंने बताया। बरसों से मैं इसी कमरे में कैद हूं, दिन भर बीतने के बाद रात में मुझे कुछ रोटियां मिल जाती हैं कभी–कभी साथ में सब्जी भी वर्ना ज्यादातर ये सूखी रोटियां, भले ही घर में छप्पन पकवान बने हो और कभी–कभी तो वो भी नहीं, इसलिए मैं कुछ रोटियां हमेशा अपने पास बचाकर रखती हूं। न मैंने पति का सुख भोगा, न बेटे बहू, पोते–पोतियों का। संदीप पेट में था, तभी इसके पिता का देहान्त हो गया। बहुत मेहनत करके मैंने संदीप को पढ़ाया, पर शादी के बाद से ही वो भी अपनी पत्नी के साथ मिलकर मुझे बेगैरत बना बैठा। ईश्वर मुझे अपने यहां भी नहीं बुला रहा। मैं इस कोठरी में कैद होकर जिन्दगी के एक–एक दिन काट रही हूँ। कहकर वृद्धा फूट–फूटकर रो पड़ी।

मां जी मैं आपको आजाद कराउंगी। आप आज की रात और इस कमरे में गुजार लीजिए।

कहकर गजाला पूर्ववत् दरवाजे को सटाकर बाहर निकल गई। क्या कोई इंसान अपनी सगी मां के साथ ऐसा कर सकता है, जिसके घर इतने सारे नौकर–चाकर उसके पैसो पर पल रहे हो, उस घर में मां के लिए कुछ रोटियां और आजीवन कैद ! घृणा से भर उठा गजाला का मन। इससे तो अच्छा जेल की कोठरी होती होगी।

नहीं जेल की कोठरी तो संदीप और अल्पना को मिलनी चाहिए। माँ को तो आजादी, खुली हवा में सांस लेने का हक दिलाना ही होगा। उसी क्षण गजाला ने सोच लिया कि डा. दम्पत्ति के चेहरे से सभ्यता का मुखौटा उतारना ही होगा। इस महलनुमा घर में एक बूढ़ी औरत के साथ कितना अन्याय हो रहा है, वो भी सिर्फ इसलिए कि मां अनपढ़ है, ये बातें गजाला ने कबीर के लौटने पर बताई। दूर देश मे बसे बच्चो की पसंद–नापसंद का इतना ख्याल और आंख के सामने रहती मां तिल–तिल को मर रही है, उन दोनों ने उसी वक्त डाक्टर दम्पत्ति के खिलाफ कठोर कदम उठाने की ठान ली, वर्ना अगले दिन वो जब यहां से निकल जायेंगे तो शायद मां की मृत देह ही निकलेगी।

अपने शहर में डाक्टर दम्पत्ति को महफूज रखने वाले कबीर को आज उनके ही घर में पुलिस बुलाकर उसके हवाले कर देने में कबीर ने जरा भी देर नहीं की। आज शायद मां–बाप के आचरण का ही असर था कि दोनों बच्चे विदेश बस गये थे और उन्हें अपने माता–पिता की परवाह नहीं थी इसी से कहा जाता है, जैसा बोओगे वैसा पाओगे।

रवीन्द्र बरनवाल, कोलकाता

बेटी बचाओ

मैं भी लेती श्वास हूँ
पत्थर नहीं इंसान हूँ
कोमल मन है मेरा
वही भोला सा है चेहरा
जजबातों में जीती हूँ
बेटा नहीं, पर बेटी हूँ
कैसे दामन छुड़ा लिया
जीवन के पहले ही मिटा दिया
तुझ से ही बनी हूँ
बस प्यार की भूखी हूँ
जीवन पार लगा दूँगी
अपना लो, मैं बेटा भी बन जाऊँगी।
दिया नहीं कोई मौका
बस पराया बनाकर सोचा
एक बार गले से लगा लो
फिर चाहे हर कदम आजमा लो
हर लड़ाई जीत कर दिखाऊँगी
मैं अग्नि में जलकर भी जी जाऊँगी
चंद लोगों की सुन ली तुमने
मेरी पुकार नहीं सुनी
मैं बोझ नहीं, भविष्य हूँ
बेटा नहीं, पर बेटी हूँ।

राजकुमार 'राज', झरिया

Scanned by CamScanner

विचारात्मक निबंध

सहानुभूति की अनुभूति

इस निबंध का प्रारंभ एक दृष्टान्त के रुप में, इस लघुकथा से प्रारंभ करता हूँ। किसी शहर में एक धन्ना सेठ रहते थे। भले ही वे थुल-थुल शरीर वाले तो नहीं थे, पर व्यापारिक बुद्धि से उन्होंने इतनी दौलत जमा कर ली थी कि लोग उन्हें मोटा सेठ का नाम से जानने लगे थे। अपने शहर मे तो उन्होंने कई अचल संपत्ति तो जमा ही कर रखी थी, अन्य शहरों में भी उनके कई कित्ते मकान और जमीन थी, यह किसी से छुपा नहीं था। वाचन कला में निपुण और ग्राहको को अच्छी तरह वे मोहना जानते थे। इसी से उनका व्यापार चमक उठा था। अब तक उन्हे दु:ख स्पर्श नहीं कर पाया था। इसलिए दु:ख क्या होता है, वे इससे अनभिज्ञ थे।

पर सदा रहै नहीं एक समाना वाली कहावत उनके साथ भी हुई। समय ने करवट लिया और जब दिन बदलने लग जाए तो दशा भी बदलने लग गई। एक बार ऐसा हुआ कि उनके घर के ही गोदाम में किसी कारण से आग लग गई। आग बुझाने में वे बुरी तरह झुलस गए। यह खबर बिजली की तरह फैल गई। शहर के लगभग सभी परिचितों के साथ-साथ सगे-संबंधी भी सहानुभूति जताने उनके पास आने लग गए। सप्ताह भर लोगों का आना-जाना लगा रहा। जो भी आवें, हाल-चाल जानें और सहानुभूति जता कर चले जाएं। सेठ जी को इससे कोई सुख अनुभव न हो, बल्कि कूढ़न महसूस हो। मन ही मन बड़बड़ावे – लोग ऐसी सहानुभूति जताते हैं मानों मेरा दु:ख ही हर लेंगे। पता नही मुझे देखकर इन्हें दु:ख हो रहा है या खुशी। मैं तो चाहता हूँ कि लोगों का आना- जाना बन्द हो जाता तो कितना अच्छा होता। इसके कुछ दिन बाद सेठजी के सेहत में सुधार होने लगा। महीना दो महीना में वे स्वस्थ होकर काम-काज सभालने लगे। इस बीच उन्होंने कई लोगों से शिकायत भी की कि उस दु:ख की घड़ी मे लोगों ने मेरा जीना हराम कर दिया। काश ! लोग मेरे पास नहीं आते तो अच्छा था। यह बात कानो कान लोगों के बीच फैल गई।

साल दो साल के बीच दूसरा झटका सेठजी को लगा। इस बार उनकी पत्नी लम्बे समय तक बीमार रही। पास-पड़ोस के लोग सेठानी जी को देखने और सहानुभूति जताने के लिए तो आए, पर उनकी संख्या पहले की अपेक्षा कम रही। सगे-संबंधियों में से पहले की अपेक्षा कम लोग ही आए। इस बार सेठजी ने मन ही मन कहा – ''चलो इस बार कुछ राहत मिली। अच्छा हुआ कि कम ही लोग आए। वर्ना जवाब देते-देते परेशान था।'' इस बार भी उनकी प्रतिक्रिया समाज के बीच फैल गई।

पुन: कुछ दिन के बाद उनका एक लड़का भयंकर एक्सीडेंट से मरते-मरते बचा। जिसने भी सुना, इस कान से सुना और उस कान से उड़ा दिया। घर पर किसी ने आकर सहानुभूति प्रकट ना उचित नहीं समझा। यह देख सेठजी ने मन ही मन कहा – ''अरे ! क्या बात है ? क्या लोग मुझसे रुठ गए हैं। मेरे दरवाजे पर सहानुभूति के दो शब्द कहनेवाला भी नहीं पहुँचा। खैर कोई बात नहीं। यह भी अच्छा ही रहा कि लोग सहानुभूति जताने के नाम पर दिमाग चाटते। इससे दु:ख थोड़े ही घट जाता है। चलो जो भी होता है, अच्छा ही होता है।

इसके बाद कुछ दिन के अन्तराल में सेठजी की बूढ़ी माँ मर गई। पर इस अंतिम बार दु:ख की घड़ी में न तो कोई अर्थी उठाने वाला आया और न ही सगे-संबधी जुटे। कोई उपाय न देख सेठजी को अर्थी ठेले पर लादकर श्मशान घाट ले जाना पड़ा। सहानुभूति तो जताना दूर उनके दरवाजे की ओर झाँकना भी किसी ने पसंद नहीं किया।

कहने का तात्पर्य यह कि सहानुभूति केवल सामाजिक रश्म नहीं होता, यह दु:ख की घड़ी में

Scanned by CamScanner

हृदय का उद्‌गार व्यक्त करने का मानवीय गुण होता है जिसे हम पीड़ितों के प्रति आत्मीयता जताने में प्रकट करते हैं। यह ऐसा गुण होता है जिससे हमारी मानवता परिलक्षित होती है। यह गुण पशु-पक्षियों में नहीं होता है। मनुष्य विवेकशील प्राणी है। यह मात्र सुख-दुःख अनुभव ही नहीं करता, यह हर्ष और विषाद भी व्यक्त करता है। सुख की घड़ी में जहां हम प्रफुल्लित होते है, दुःख की घड़ी में हमारी संवेदना फूट पड़ती है। सुख की घड़ी में जहाँ हँसी के फव्वारे छूटते हैं वहीं दुःख की घड़ी में हमारे आँसू भी छलक पड़ते हैं। मनुष्य सदा न तो सुखी रहता है और न ही दुःखी। सुख में हम भले ही इठलावे, पर यह भी हमें ध्यान रखना चाहिए कि समय का मिजाज कब बदलकर घेर लेगा, कोई नहीं जानता है। इसलिए कहा गया है कि-

''दीरघ साँस न लेहुँ दुःख, सुख साई नहीं भूल।
दै दै सों क्यों करते है, दै दै सों कबूल।।''

मन में यह भाव पैदा होना कि दुःख हमें कभी घेरेगा ही नही, भयंकर भूल है। दुःख के बादल कभी भी घिर सकते हैं और कभी भी छँट सकते हैं। आज जो दुःखी है, कल भी दुःखी रहेगा, ऐसा सोचना भयंकर भूल है। ऐसे में दुःख की घड़ी में कौन किस भाव से हमसे मिलने आता है, कौन जानता है ? उसके प्रति तो हमें कृतज्ञ बनना चाहिए न कि मन ही मन कुढ़न पैदा करना चाहिए। हर कोई केवल दिखावा मात्र के लिए ही सहानुभूति प्रकट नहीं करने आता है।

मेरे जीवन में एक बार एक घटना घटी। एक परिचित परिवार का एक जवान लड़का भयंकर रुप से दुर्घटना ग्रस्त होकर संसार से विदा हो गया। दुर्घटना के पूर्व मैंने उसे चेताया भी था और जाने से रोका भी था। पर उसने नहीं माना। परिणामतः उसे जान से हाथ धोना पड़ा। पर उसके परिवार वालों की समझदारी देखिए कि लोगों ने मेरे ऊपर ही आरोप लगाया कि चलते समय मैंने उसे रोका, इसलिए उसने और उत्तेजना में आकर सफर किया। वर्ना क्या पता कि उसके साथ वह घटना नहीं घटती और वह बच गया होता। मैं इस अपयश के अपमान का घूँट पीकर रह गया। इसके ठीक बीस वर्ष बाद उसी परिवार में दूसरी घटना घटी। इस बार पता चला कि उसी परिवार का एक और लड़का दुर्घटना में मारा गया। समाचार सुनकर मुझसे रहा न गया और दौड़ा-दौड़ा मैं वहां जा पहुँचा। इस बार मैंने उनलोगों से पूछा कि उस बार मेरे कारण उसका अपशकुन हो गया था, इसलिए वह लड़का संसार से विदा हो गया, पर इस बार तो ऐसा नहीं हुआ। फिर दुबारा इस तरह की घटना क्यों घटी ? इस पर आरोप लगाने वालों के मुँह पर ताला लग गया, कुछ कहते न बना। तात्पर्य यह कि झूठा आरोप लगाकर सच्ची सहानुभूति प्रकट करने वालों के प्रति अपने दिमाग का दिवालियापन नहीं दिखाना चाहिए।

सहानुभूति दो शब्द से बना है - सह और अनुभूति। इसका शाब्दिक अर्थ होता है - अपने साथ-साथ दूसरा भी दुःख अनुभव करने वाला। यह जरुरी नहीं कि दुःख की घड़ी में जो सहानुभूति व्यक्त करता है, वह हमारे बीच ही हो। आज के इस भागम भाग युग में जब संचार के माध्यम इतनी तेज गति से काम कर रहे हैं कि पांच मिनट के अन्दर ही हमारे विचार सारी दुनिया में गूँज जाते हैं तो सहानुभूति हम कहीं से भी व्यक्त कर सकते हैं - मोबाइल, टी.वी, पत्र, समाचार पत्र, लेख आदि के माध्यम से भी हम किसी के दुःख की घड़ी में सहानुभूति के दो शब्द तो व्यक्त कर ही सकते हैं। ऐसे में उस धन्ना सेठ जैसा हम अहंकार में डूबकर सहानुभूति प्रकट करने वाले के प्रति उपेक्षा का भाव रखें तब तो अपने आचरण से हम एक बार पूरे समाज में अकेला हो जा सकते हैं।

हमें यह मानकर चलना चाहिए कि हर इंसान के पास हर तरह का न तो हूनर होता है और न ही ज्ञान। हर कोई धन्ना सेठ नहीं हो सकता। कोई धन कमाने में माहिर है तो कोई विद्या में निपुण। कोई कलाकार है तो कोई मालाकार। समाज में हर किसी की जरुरत है। पता नहीं किसके हाथ से किसका काम सिद्ध होने वाला है। कौन जानता है। हर कोई न तो धन कमाना ही जानता है और न ही धन से सब कुछ खरीदा जा सकता है। अगर ऐसा होने लगे तो फिर

Scanned by CamScanner

देश के ओहदेदारों की क्या जरूरत जिनके आगे बड़े-बड़े पूँजीपति सर झुकाते है। किसी की कला को कोई परख नही पाता है तो यही माना जा सकता है कि भैस के आगे बीण बजाय, भैस बैठी पगुराय। किसी की गिरती प्रतिष्ठा को बचाने का अगर कोई अच्छा तरीका अपनाता है तो उसकी इज्जत न कर उसकी खिल्ली उड़ाई जाय तो इससे उसको भला क्या घाटा हो सकता है। दुबारा तो वह कान मल लेगा और कभी भी
उस पर विश्वास नहीं करेगा।

ऊँचे-ऊँचे महलवालों के पास जो भी धन छुपा होता है, वह खून-पसीने की कमाई का अंश होता है कम और अनुचित ढंग से बुद्धि-बल और छल-बल से संचित अधिक। उनके घर किस तरह का पूआ पकता है, कोई नहीं जानता। पर उसकी गंध तो छुपी रहती नहीं, किसी न किसी रुप में फूटकर बहकर आ ही जाती है। ऐसे में जब विपत्ति में वे घिर जाते हैं तो सच्ची सहानुभूति व्यक्त करने वालों को भी शक की निगाह से ही देखते हैं। मैं मानता हूँ कि भगवान ऐसे लोगों का भला करे और उनसे सदा बचायें। सहानुभूति की अनुभूति हमें यही कहती है।

डॉ. भुवनेश्वर मोदी
मोदी भवन, ब्लॉक मोड़,
पतरातू, जिला – रामगढ

क्या हो रहा है

देश-समाज के बिगड़े रुप से
घबड़ा रहा है देशवासी का मन,
हो रहा क्या आज समाज में
कभी न थी दुरुहता का बंधन।

डसने को अच्छे भले समाज को
किया नेताओं ने आज पूरी तैयारी,
बना रहे जो गड्ढे इंसान वास्ते
ऐसे में मच जायेगी अटूट मारामारी।

पैसे की भूख लगी है सरकार को
नहीं वह देख रही आगत तस्वीर,
लूट रहे वे सभी दोनों हाथों से
जन साधारण आज बन रहे फकीर।

दैनिक वस्तुओं का दाम बढ़ाकर
थपथपा रहे हैं वो अपनी पीठ,
साधारण जनता जाये भाड़ में
बन गये हैं वे सब ढीठ।

विस्फोट कभी-क्या हो जायेगा ?
शान्त बने हुए इस समाज में,
नहीं सोच रहे ये औहदाधारी
कि शोषित हो रहे थे मध्यम वर्ग में।

हार रही जनता भ्रष्टाचार महंगाई से
जिसका कही नहीं दिख रहा है अंत,
फिर भी, आज के इस विषमता में
सरकारी अमला बने हुये हैं संत।

प्रायः पार्टियों की चाह है कुर्सी
जन समस्या का कोई मोल नहीं,
कैसे बचेगी इस देश की स्मिता
नेतागण को इससे मोह नहीं।

वायदे बड़े-बड़े होते चुनाव में
जीत के बाद नहीं होती सुधि,
ओढ़ लेते वे स्वार्थ का चादर
रहती सिर्फ उन्हें लूट की बुद्धि।

लूट रहे देश के ये कुछ लोग
भले ही भूख से तरपे करोड़ों लोग,
चमक अमीरी, थाह नहीं गरीबी का
भारत का सच्चा यही संयोग।

प्रताप नारायण बरनवाल
कैंमा शिकोह, पटना सिटी

Scanned by CamScanner

हमारी भू (B.H.U.) यात्रा

जन्माष्टमी में दो दिन बाकी थे। मैंने सामान बांधना शुरु किया। पत्नी ने औपचारिकता वश पूछा कहां की सवारी है मैंने कहा इस बार घूमने का मूड बना है तुम भी चलो। पत्नी प्रसन्न होकर अपना सूटकेश पैक करने लगी। इस बार हमारे साढू जी गाइड थे। सोने में सुहागा था। रात का भोजन करके हम स्टेशन गये। बनारस के लिये गाड़ी पकड़ी। सुबह बनारस पहुँचे। रिक्शा से साढूजी के व्यापारी मित्र के यहाँ पहुँचे। हमें देख व्यापारी मित्र खुश हो गये। कहने लगे अहोभाग्य दर्शन हुए। साढूजी ने हमारा परिचय उनसे कराया। नित्यकर्म से निवृत्त होकर हम विश्वनाथ दर्शन को गये। दर्शन के पश्चात् व्यापारी महोदय के यहां गरिष्ठ नाश्ता हुआ। मित्र ने व्यस्तता के कारण रात में साथ देने की बात कही। हमने पुनः मंदिर का दर्शन किया। पर कोटे का हिस्सा स्वर्ण निर्मित था। उसे पंजाब केशरी रणजीत सिंह ने बनवाया था। दो पहर में मानस मंदिर देखा। तुलसीदास एवं रामायण की चल मूर्तिया थी। विश्वनाथ गली में एक–एक सकोरा लस्सी पी और पान की गिलौरी खाई। दोपहर के बाद व्यापारी महोदय के यहां पहुँचे। बेचारे प्रतीक्षारत थे। खाना पक्की रसोई थी। पेट उफन गया किन्तु चित्त प्रसन्न रहा। भोजन के पश्चात् मित्र महोदय ने गाड़ी निकाली। हम भारत माता दर्शन को गये। इसके बाद बनारस हिंदू विश्वविद्यालय घूमने चलें। इसका निर्माण। महामना मदन मोहन मालवीय ने करवाया था। चन्दा लेने वे कहां नहीं गये। एक बार वे हैदराबाद पहुँचे निजाम को अपना आने का उद्देश्य बतलाया। निजाम ने अपना जूता दे दिया। जूता लेकर मालवीय जी चौक पर पहुँचे कहां निजाम का जूता नीलाम हो रहा है जिसे लेना है ले लो। एक मुसलमान सेठ ने ठकुरसुहाती वश जूता ले लिया। 25000/– रु. दिये। सूर्यगढा, दरभंगा, नेपाल कहां के राजा ने चंदा नहीं दिया। उद्योगपति भी पीछे नहीं रहे। कहा जाता है कि मालवीय जी ने गंगा में सवालाख गायत्री जप किया था इसलिए वे वाकसिद्ध हुए। विश्वविद्यालय बहुत बड़ा है। उसके विभिन्न अंगों को संक्षेप में देखा। साढू जी ने व्यापारी महोदय के बच्चों के लिये खिलौने और मिठाइयां ली। व्यापारी महोदय के न, न कहने पर साढू जी बोले यह चाचा भतीजा की बात है।

दूसरे दिन व्यापारी महोदय मथुरा का टिकट ले आये। हम नित्यकर्म एवं नाश्ते के पश्चात् ट्रेन में बैठे। मथुरा पहुंचे। यहां सिंधी धर्मशाला में ठहरे। तीन चार बंगाली सज्जन मैनेजर से बात कर रहे थे। उन्हें कोने वाला कमरा मिला। मैनेजर ने हमें कहा ये गंदे हैं जहां सोते हैं वहीं भोजन बनाते हैं और भोजन करते हैं। मथुरा में श्रीकृष्ण का जेल उग्रसेन का मंदिर देखा। एक स्वर्ण स्तंभ का भी दर्शन हुआ। श्रीकृष्ण जेल का दूसरा हिस्सा एक मस्जिद है। यह मस्जिद काफी बड़ा है। इसे औरंगजेब ने बनवाया था। मथुरा में पेड़े खरीदे जिन्हें बन्दर चट कर गये। दुबारा पेड़े खरीद कर सूटकेस में रख दिया। ध र्मशाला में एक बंगाली सज्जन सीढ़ियों से उतर रहे थे। हमें देखकर बोले 'देखुन ना मोसाय आमादेर माठे रान्ना कोरते बोलछे' मैं 'जैसा देश वैसा वेश' बोलकर कट गया।

एक बार कच्छ प्रदेश की महारानी विश्वनाथ दर्शन हेतु बनारस पधारी थी। साथ में कुछ सखियां और चन्द सिपाही थे। शिव दर्शन हेतु रानी मंदिर सखियों सहित गई सिपाही बाहर रह गये। रानी के गहने देख पंडो की लार टपक गई। उन्होंने रानी के गहने छीन लिये और अलग बिठा दिया। देरी होती देख सिपाहियों में खलबली मच गई। उधर से औरंगजेब की सेना आ रही थी। सिपाहियों ने घटना वजीर को सुनायी। उसने मंदिर के उस हिस्से को तुड़वाया और रानी को मुक्त किया। इस प्रकार मंदिर तोड़ने का प्रकरण चला। शाम को हम गोकुल गये। वहां का सारा वातावरण कृष्णमय था। स्थान–स्थान पर मयूर नृत्य कर रहे थे। तत्पश्चात् हम वृन्दावन गये। वृन्दावन में राधे कृष्ण के कई मंदिर देखे। यहां गलियों में कितने मठ थे। हम एक मठ के अन्दर गये। यहां महिलायें

Scanned by CamScanner

लगातार भगवद भजन कर रही थी। वे विधवाओं के पहनावे में थी। पूछने पर पता चला कि विभिन्न स्थानों से उन्हें मथुरा वृन्दावन ले जाया जाता था। यहां वे भजन करती थी एवज में उन्हें पांच रुपये प्रतिदिन मिलते थे। वर्ष में एक बार दो कपड़े भी मिलते थे। कम मिलने पर भी महिलाओं में संतोष देखा। घरेलू झगड़ों की तुलना में वातवरण शांत था। बनारस लौटकर हमने गंगा मां की आरती देखी। नौका द्वारा हम गंगा के कुछ हिस्सों में भ्रमण किया। रात को व्यापारी महोदय के यहां भोजन अत्यन्त उत्तम था।

हम दूसरे दिन नौका से रामनगर गये। रामनगर का किला भग्न था किंतु आकर्षक था। साढू जी ने अपने आने का उद्देश्य दरबान को बतलाया वह दौड़ता हुआ महाराज के पास पहुंचा। महाराज साढूजी का नाम सुनकर पधारे अभ्यर्थना की तथा हमें सजावटी कमरे में ले गये। शर्बत एवं मिष्ठान्न से हमारा स्वागत किया। साढूजी व्यापार के सिलसिले में कई बार महाराज से मिल चुके थे। महाराज ने मोतियों की एक माला दिखलाई। एक–एक मोती बादाम जितने थे। माला का मूल्य ढ़ाई लाख रुपया था। यह मूल्य टैग में भी लिखा था। मोल–तोल होने लगा अंत में 75,000/– में माला टूटी। साढूजी ने पांच हजार नगद और 70,000/– का चेक देकर माला खरीदी। सौदे से दोनों प्रसन्न थे। मेरा मन कुछ उदास था महाराज कहने लगे क्यों घूमने के पैसे नहीं है'' मुझसे ले लो। उसी समय याद आया पत्नी के सूटकेस में 10,000/– हैं। हमने महाराज से विदा ली। अगले दिन लौटती ट्रेन से हम आसनसोल वापस आये।

अरविन्द कुमार बरनवाल
भूतपूर्व शिक्षक
चित्तरंजन रेलवे स्कूल

शोक संदेश

उर्मिला देवी 64 वर्षीय पत्नी श्री बासुदेव प्रसाद बरनवाल भिलाई नगर छत्तीसगढ़ निवासी का निधन दिनांक 24.03.2019 दिन रविवार को अपने निवास पर हुआ। ये एक सहृदय अतिदयालु एवं धर्मपरायण महिला थी। ये अपने पीछे पति एक पुत्र दिलीप कुमार पोत्र आदित्य बरनवाल एवं पौत्री अमुलिया बरनवाल एवं तीन पुत्री सरिता देवी, रीना बरनवाल एवं नीतू रानी बरनवाल एवं भरा पूरा परिवार छोड़कर चली गई। छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष बरनवाल समाज उनके निधन पर संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति की कामना करती हैं।

पुत्र वधू मीनू बरनवाल

Gram - Gupta
☎ (06274) 222050 (S)
GUPTA TEXTILES
Wholesale Cloth Merchant
Behind Bohra Market
Marwari Bazar, Samastipur - 848 101
(Bihar)
Prop : Indradeo Gupta
3/16

Scanned by CamScanner

जय हो भारत–भूमि

जय हो जय हो। अखण्ड भारत भूमि।
अमर शहीदों ने तेरी महिमा बखानी
तेरा चन्द्र आकाश से शान्ति–सुधा बरसाता है,
मलय पर्वत अविरल नव जीवन सरसाता है।
मन हरा–भरा कर देता है आँचल तेरा धानी,
जय हो जय हो भारत–भूमि।
तेरे हृदय–हिमालय से गौरव–गंगा बहती है,
अपने ममतामय प्यार से प्लावित करती रहती है।
ध्यान–मग्न हो रही देख सरस्वती–विधि वाणी,
जय हो जय हो भारत–भूमि।
तेरे चित्र–विचित्र आभूषण हैं फूलों के हारों के
उन्नत–अम्बर आतपत्र में सोने जड़े हैं तारों के।
नम से मोती झरते हैं या बादलो से पानी।
जय हो जय हो भारत–भूमि।
वीर–हस्त हरता है तेरे बल–कुल का सब शक,
रत्नाकर–रस पैरों में अब भी पड़ी कनक–पाक।
सच्चा सिंह सवार बनी तू विश्व पालनी,
जय हो जय हो भारत–भूमि।
वीर सेना दिग्विजय जिन्होंने विश्व जीत अभिमान किया,
तेरा मृतपात्र मात्र रख धन का त्याग किया।
तेरे जन हुए हैं ऐसे विज्ञानी, दानी, ज्ञानी,
जय हो जय हो भारत–भूमि।
तेरा बड़ा अतीत काल है आराध्य योग समर्थ,
वर्त्तमान सैन्य साधन है भविष्य सिद्धी अर्थ।
काश्मीर मुक्ति की युक्ति तू रख अभिमानी,
जय हो जय हो भारत–भूमि।

डॉ. विनय कुमार 'विष्णुपुरी'
शीला भवन शिवशिक्ति नगर
बाजार समिति, पटना – 800006

शत्–शत् नमन

ओ भारत के वीर जवानों
शत्–शत् वन्दन और नमन,
हुए शहीद देश रक्षा हित
करते तेरा अभिनन्दन।
धूल चटाकर शत्रु को तुमने
किया मौत का आलिंगण,
तेरे कंधे पर ही राष्ट्र का
गौरव–गरिमा और अमन।
आयी जब भी घोर आपदा
किये निछावर तन–मन–धन,
मातृभूमि की लाज बचाई
खोकर तुम अपना जीवन।
हमें गर्व है तुम पर वीरों
नाज तेरी कर्मठता पर,
चूर किये मन्सूबे अरि के
काँपे शत्रू अब थर–थर।
नहीं दुश्मनों की अब हिम्मत
करते हैं छुप–छुप के वार,
दिखा दिया है जौहर तुमने
देशभक्ति का बारम्बार।
चीन हमें देता है घुड़कियाँ
पाक करे गद्दारी नित्य,
इनके झूठ से उठा है पर्दा
जग जाहिर है इनके कृत्य।
विश्वसनीयता नहीं बची है
पाक–चीन की आज कहीं,
पर अपने सैनिक हैं तत्पर
गलने देंगे दाल नही।

मोहन प्रसाद बरनवाल
उखरा
वर्द्धमान

Scanned by CamScanner

धर्म का बीज

समाज में हर इंसान को साधु की तरह जीवनयापन करना चाहिए। धर्म साधुओं के विषय में क्या कहता है ? जो व्यक्ति मन में सोचते हैं कि मेरे लिये मेरा प्राण जितना प्यारा है और लोगों के लिये भी उनके प्राण भी उतने ही प्यारे हैं, यही समझकर जो दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं, वही साधु हैं। साधुता के विरूद्ध नहीं जाना है। जहाँ धर्म का निर्देश है, वहाँ दूसरी बातें नहीं चलेगी। साधु से तात्पर्य सफेद वस्त्रधारी व्यक्ति से नहीं है। प्राचीनकाल में नियम था कि जो व्यक्ति सिर से पैर तक सफेद वस्त्र धारण किये हुये हो, उसे साधु कहते थे और अगर लाल–गेरूवा वस्त्र हो तो उसे सन्यासी कहते थे। मान लीजिए कि जीवित मछली है और आप उसे काट रहे हैं। वह रो रही है। वह बचना चाहती है और आप उसे मारना चाहते हो। उसे अपने आपको बचाने की ख्वाहिस है, तो आप में भी अपने को बचाने की ख्वाहिस है, उतनी ही अभिलाषा है, तमन्ना है। आप उसे मारकर जीवन से वंचित कर रहे हैं तो आप साध ु का काम नहीं कर रहे हैं। धर्म का जो निर्देश है वह आपको मानना ही पड़ेगा। आपको उस मछली को मारना नहीं चाहिए। वह आपकी दुश्मन नहीं है। यदि आप उसे मारते हैं तो धर्म–विरोधी काम कर रहे हैं। यहाँ आपका यह तर्क नहीं चलेगा कि मछली से प्रोटीन मिलता है। प्रोटीन के लिये और भी कई विकल्प हैं। धर्म का निर्देश आपको मानना ही पड़ेगा। इससे स्पष्ट है कि जहाँ धर्म का निर्देश है, वहाँ दूसरी बात नहीं चलेगी। जीव विज्ञान क्या कहता है आदि–आदि यह सब नहीं चलेगा। अंततः यहाँ पर मेडिकल साइंस आपको नहीं बचायेगी। आपका धर्म, धर्म ही है जो मौत के बाद भी आपके साथ रहेगा। मेडिकल साइंस मौत के बाद आपके साथ नहीं चलेगी। दुनिया के जितने मित्र हैं, प्रियजन हैं, वे मौत के बाद साथ नहीं रहेंगे। वे चिता पर चढ़ा देंगे, उसके बाद अपने–अपने घर चले जायेंगे, लेकिन धर्म धर्म अंत तक साथ रहता है। इसलिए आपका भी काम है धर्म को मजबूत बनाना। जो अंत तक साथ रहे वही तो सच्चा मित्र है। सच तो यह है कि मनुष्य अपने अच्छे कर्म के द्वारा ही समाज में प्रतिष्ठित होते हैं। जो लोग अच्छे कर्म करते हैं उनमें धर्म का बीज कहीं न कहीं अवश्य रहता है।

– संकलित

09002726608
08348697971

AJIT KUMAR BURNWAL

NEW ALANKAR JEWELLERS
PUCCA BAZAR, ASANSOL - 1
(OPP. HEAD POST OFFICE)
PHONE : 0341 -2309248

JEWEL GARDEN
88, G. T. ROAD
OPP. BAZAR, KOLKATA, ASANSOL - 1
PHONE - 0341 - 2221494

8/19

A House of Exclusive 22 Carat Halmark Showroom

Scanned by CamScanner

बरनवाल सेवा सदन न्यास, धनबाद

बरनवाल सेवा सदन, धनबाद के निर्माणार्थ सहयोग करें। सहयोग करने वाले का नाम बरन संकल्प में प्रकाशित किया जायेगा।

1. 10000/– या ऊपर का सहयोग देने वालों का शीलापट्ट पर नाम।
2. एक लाख रुपये का सहयोग देने वालों का शीलापट्ट पर नाम के साथ–साथ हॉल में तैलिय चित्र।
3. दो लाख पचास हजार रुपये का सहयोग देने वालों के नाम पर एक वातानुकूलित कमरा, हॉल में तैलिय चित्र व शीलापट्ट पर नाम।
4. दो लाख पचास हजार रुपये से अधिक का सहयोग देने वाले समाज के भामाशाहों का नाम शीलापट्ट पर वरीयता क्रम से दी जायेगी।

सेवा सदन भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है, समाज के सभी सम्मानित सदस्यों से सहयोग की अपील है। आप हमें सीधे हमारे एकाउंट में भी राशि जमा कर सहयोग कर सकते हैं। हमारा एकाउंट विवरण निम्नवत है–

बरनवाल सेवा सदन न्यास

बैंक : यूको बैंक, हीरापुर ब्रांच

धनबाद

खाता सं. : 01910100935484

IFSC Code : UCBA0000191

इस संदर्भ में आप निम्नवत लोगों से भी संपर्क कर सकते हैं।

पी.एल. बरनवाल	**बालेश्वर प्रसाद**
अध्यक्ष	सचिव
मो. : 9431187661	मो. : 9431725382
7004188137	7717762093

Scanned by CamScanner

वैवाहिक विज्ञापन के पात्र सम्बन्धी सूचना का अभिभावकगण आपने स्तर से पूरी तरह जांच कर संतुष्ट हो लें – सम्पादक

11/19

वधू चाहिए

मनीष कुमार, DOB 1989, 5'10", B.Tech. BPCL में Asstt. Manager के पद पर कार्यरत हेतु शिक्षित, गोरी एवं सुयोग्य वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता सुरेन्द्र प्रसाद, झाझा (बिहार), मो. : 9990167831, 9973059257

6/19

वधू चाहिए

शोभित प्रिय, 32, 5' 7'', मांगलिक, स्मार्ट एवं आकर्षक सी.ए. फाइनल में तथा अपना निजी प्रेक्टिस हेतु मंगली, सुन्दर, सुयोग्य एवं शिक्षित वधू चाहिए। पिता श्री विजेन्द्र कुमार, माधोपुर, शेर कोठी, मुँगेर से फोटो बायोडाटा एवं कुण्डली के साथ संपर्क करें। मो. : 7007823317 मुँगेर, 7905335030 (लखनऊ)

1/21

वधू चाहिए

Mukesh Burnwal, S/o Jay Prakash Burnwal, 27, 5' 9", fair, Chartered Accountant presently working as Asstt. Manager (Finance) in Eastern Coalfield Ltd. (ECL), of Kajora Bazar, Durgapur (W.B.), Contact No. : 9932363264

8/19

वधू चाहिए

कुणाल किशोर, 31, 5' 11'', गोरा, स्मार्ट, B.Tech. (Electronics) IIT खड़गपुर, बंगलोर में In-Mobi कं में उच्च पद पर कार्यरत, आकर्षक वेतन हेतु उच्च शिक्षित, लम्बी, गोरी, सुन्दर एवं कार्यरत वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता युगल किशोर, अपर आयुक्त (सेवानिवृत), झारखण्ड सरकार, राँची। मो. : 7461999661, 7461999665

10/19

वधू चाहिए

कुणालदीप, 29, 5' 4'', स्मार्ट, आकर्षक, SBI नागपुर में Deputy Manager हेतु सुन्दर एवं सुयोग्य वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता श्रवण कुमार बरनवाल, गोल्डेन अलंकार, अम्बिका मार्केट, बड़ा बाजार, देवघर (झारखण्ड), मो. : 9431369172, 9199735007, E-mail : sk30dec@gmail.com

6/19

वधू चाहिए

अभिषेक कुमार, 28, 5' 7'', स्मार्ट, सुन्दर, B.Tech. IIT गुवाहटी से सीनीयर साफ्टवेयर इंजीनियर डायरेक्ट आई कं. में बहुत बड़े पैकेज एवं नीजी फ्लैट (3 BHK), बंगलोर में कार्यरत सुन्दर, प्रोफेशनल / घरेलू वधू चाहिए। फोटो एवं बायोडाटा के साथ संपर्क करें : श्री अरुण कुमार बरनवाल, स्टेशन रोड, बाटा मोड़, गया। मो. 9504762251, 9110101188

6/19

वधू चाहिए

बीपीन कुमार, 5'8'', जनवरी 1988, सीवील कोर्ट खगड़िया (बिहार) में Admin. Officer cum कोर्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत हेतु सुन्दर, सुशील एवं शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता नरेश बरनवाल, वारिसलीगंज (नवादा), मो. : 9060217521, 7870808849

7/19

वधू चाहिए

VIPIN ADHIR, 30, 5' 11'', स्मार्ट, B.Tech, वर्तमान में Sr. Software Engr. Amazon, Bangalore में कार्यरत हेतु सुन्दर, लम्बी (कम से कम 5'4'') प्रोफेशनल वधू चाहिए। Software Engr. को प्राथमिकता। संपर्क करें : सत्यनारायण वर्णवाल, धनबाद, (झारखण्ड), मो. : 9973662744, 8409560401, 9431509455

Scanned by CamScanner

10/19

वधू चाहिए

मनोज कु. बर्णवाल, 30, 5' 10'', गोरा, स्मार्ट, M.C.A., E.Y. बंगलुरु में साफ्टवेयर इंजीनियर, T.L. के पोस्ट पर कार्यरत के लिए सुन्दर, सुशील एवं योग्य वधू चाहिए। कार्यरत को प्राथमिकता दी जायेगी। संपर्क करें : राजेन्द्र प्र. बर्णवाल, दुर्गापुर (WB) मो. : 9232091149, 8436191005

7/19

वधू चाहिए

अमितेन्द्र बर्णवाल, 30, 5'10'', फयेर एवं स्मार्ट, असिस्टेन्ट पेशकार, झारखण्ड कोर्ट में कार्यरत हेतु फेयर, व्यूटीफूल एवं शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता राजेन्द्र प्रसाद बर्णवाल, मुँगेर। मो. : 9016730875, 9835257981

6/19

वधू चाहिए

Rohit Barnwal, 5'11", 16/7/1991, B.Tech. (BIT Sindri), MBA (DU) working as Consultant in PWC (MNC) Gurgaon. Looking for fair, well educated, 5'4", vegetarian girl. Contact : Father Rajendra Prasad Baranwal, Dhanbad, Mob. : 9430354889

7/19

वधू चाहिए

रवि कुमार बरनवाल, 30, 5' 9'', स्मार्ट, स्लीम, NIT, M.Tech., रेलवे में JE इंजीनियर के पद पर कार्यरत हेतु संस्कारी, गृहकार्य दक्ष कम से कम 5' 4'' लम्बी वधू चाहिए। फोटो एवं बायोडाटा के साथ संपर्क करे : पिता सोहन लाल बरनवाल, मकतपुर, गिरीडीह (झारखण्ड), W.A. No. : 7360820074, 7549077259

7/19

वधू चाहिए

Sujit Kumar, 32, 5' 9", fair complexion, Smart, Doctor in PMCH, Patna requires preferrable Gov. working bride / professionally qualified suitably matched bride. Contact : Santosh Kumar, Mob. : 6205810646, Rishu Kumar, Mob. :9570567167

6/19

वधू चाहिए

रविशंकर कुमार,30, 5' 11'', B.Tech., फेयर एवं स्मार्ट, स्टेशन मैनेजर के पद पर सेलम (Shelam) डीभीजन तामिलनाडु में कार्यरत हेतु सुन्दर, सुशील, गोरी, शिक्षित गृहणी, कम से कम 5' 3'' लम्बी वधू चाहिए। पिता झारखण्ड सरकार में कनीय अभियंता के पद पर कार्यरत एवं राँची में अपना घर। संपर्क करें : 9835230159, 7992336754

6/19

वधू चाहिए

मिलिन्द उत्सव, 28, 5' 10'', B.Tech., YFRET Communication, में Principal Engr. के पद पर 20 लाख के पैकेज पर कार्यरत हेतु गोरी, सुशील, गृहकार्य दक्ष, (कार्यरत को वरीयता) वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता उद्धव प्रसाद, मुख्य प्रबंधक, BCCL धनबाद, मो. : 9470596634, 9431375821

6/19

वधू चाहिए

शेखर प्रसाद साव बर्णवाल, 31, 5' 9'', MBA, Dy. Manager, INDUSIND Bank, Kolkata में कार्यरत हेतु सुन्दर, सुशील एवं शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता त्रिभुवन प्रसाद साव बर्णवाल, बैरकपुर, कोलकाता, मो. : 9051454246, 9836270300

5/19

वधू चाहिए

संदीप आनन्द, 33,5' 10'', इन्टर, अपना कपड़े का आसनसोल में व्यवसाय, पिता सुरेश कुमार का इकलौता पुत्र हेतु सुयोग्य शिक्षित, गृह कार्य दक्ष गृहणी वधू चाहिए। संपर्क करें : 9932722978

5/19

वधू चाहिए

प्रह्लाद कुमार, 29, 5' 9'', गोरा, स्मार्ट, सिवील कोर्ट में कार्यरत हेतु सुयोग्य, गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए। संपर्क करें : भोलाशंकर हार्डवेयर व्यवसायी, नवादा (बिहार), 8409348955, 7209384543

Scanned by CamScanner

8/19

वधू चाहिए

अभिषेक राज, 28, 5'8'', रंग साफ, आकर्षक व्यक्तित्व, B.Tech., पूणे में All States MNC में आकर्षक पैकेज पर कार्यरत, पूणे में अपना 3 BHK फ्लैट हेतु सुन्दर, सुशील एवं प्रोफेशनल वधू चाहिए। पिता जयराज गुप्ता, Retd. SAIL कर्मी, चीरा चास, बोकारो, मो. : 7004528033, 8809920415 एवं 9470569816 पर संपर्क करें।

7/19

वधू चाहिए

मयंक कु. बरनवाल, फेयर, 29, 6', Electl. Engineer, प्रबंधक हुन्डई शोरुम, मेट्रो दिल्ली में हेतु डीग्री होल्डर, प्रोफेशनल, फेयर वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता मनोज कुमार बरनवाल, पुराना बाजार, गोमो (धनबाद), मो. : 9308983951, 3934103661, 9523726580 (W.A.)

6/19

वधू चाहिए

कुमार मितेश, DOB 1990, 6', B.Tech., वर्तमान में Sr. Software Engr., Huawei, Banglore में कार्यरत हेतु सुन्दर, लम्बी (कम से कम 5' 4'') प्रोफेशनल वधू चाहिए। Software Engr. को प्राथमिकता। संपर्क करें : मनोज कुमार बरनवाल, गया, मो. : 9934891201

7/19

वधू चाहिए

Ankur Baranwal, 32, 5' 9", divorced no child working in an IT company as Sr. UI / UX designer in Pune. Completed his post graduation from Symbiosis, well settled in Pune with handsome salary, S/o Rakesh Baranwal, Varanasi, UP, Mob. : 8960227465, 8327671102

7/19

वधू चाहिए

शुभम दीप, 28, 5' 9'', गोरा, स्मार्ट, मेडिकल कं. में सेल्स आफिसर हेतु गोरी, सुन्दर, शिक्षित एवं गृहणी वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता बिनोद कुमार (बैंक मैनेजर), गिरीडीह, मो. : 9123154895

6/19

वधू चाहिए

Anupam Baranwal, 30, 5' 7", B.Sc., MBA, Assistant Controller in Indian Air Force (Central Govt. Job), 7 Lac/annum, need bride well educated, well natured & beautiful (priority for teaching / nursing career and upresident). Contact father Rakesh Baranwal, 8736833382, 8004710865, Whatsapp 7398962208

6/19

वधू चाहिए

पंकज कुमार, 28, 5' 6'', गोरा, स्मार्ट, M.Tech. (Civil), IIT रुड़की, गया इंन्जिनीयरींग कॉलेज में प्रोफेसर, आकर्षक वेतन हेतु शिक्षित, गृहकार्य दक्ष सुन्दर कन्या चाहिए। संपर्क करें : रामजी प्रसाद बरनवाल, तरवा (गया), मो. : 6202155466, 8651456477

9/19

वधू चाहिए

Akash Deep Kamal, 29, 5' 8", fair, smart, B.Com, MBA (Kolkata) distributor, C&F Medicine Ayurved Brother in law CA looking for a suitable match. Contact father Manmohan Lal Gupta, Siliguri, 9434750286, Mr. Shashi Prakash Baranwal, Advocate, Siwan (maternal uncle), 8709981937

7/19

वधू चाहिए

Pankaj Kumar, DOB 3 Dec. 1990, 5' 11", Scientific Officer, Bhabha Atomic Research Centre, Govt. of India posted at Kolkata with Annual income of 15 lakh हेतु उच्च शिक्षित, लम्बी, गोरी, सुन्दर वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता अशोक लाल, शाहगंज, महेन्द्रु, पटना–6, मो. : 9852891297, 8697584746

Scanned by CamScanner

8/19

वधू चाहिए

रोशन कुमार, 29, 5' 9'', M.Com., B.Ed. स्मार्ट, गोरा, Teacher + अपना कोचिंग इन्स्टीच्यूट, Income 6 लाख प्रतिवर्ष के लिए शिक्षित, सुन्दर वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता प्रदीप कुमार, घास (बोकारो), मो. : 9031747366, 8651309022

7/19

वधू चाहिए

अमरदीप मोदी, श्री गणपत मोदी के पोते, 28, 5' 11'', स्मार्ट, B.Tech., IIT Mumbai, आकर्षक वेतन के साथ गुड़गाँव में एवरेस्ट ग्रुप (U.S.A. आधारित क.) में निदेशक हेतु उच्च शिक्षित लम्बी, गोरी, सुन्दर और कामकाजी वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता अजय कुमार, आईएएस, उपनिदेशक, सीएंडएजी, कोलकाता, मो. : 9431351451

6/19

वधू चाहिए

संजीव कुमार, 33, 5' 7'', गोरा, स्नातक, Business (Distributor) के लिये सुन्दर, सुशील, शिक्षित एवं गृहणी वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता गोपाल प्रसाद बरनवाल, माड़वारी धर्मशाला के पास, झाझा (बिहार), मो. : 9006215265, 9334078314

7/19

वधू चाहिए

सुजीत कुमार, 30, 5' 8'', गुड्स गार्ड उत्तर मध्य रेलवे (इलाहाबाद) हेतु गोरी, सिम्पल, गृहणी, सुन्दर वधू चाहिए। संपर्क करें : कृष्ण कु. बर्णवाल, सुजीत मेडिकल हॉल, खन्दक मोड़, बिहारशरीफ (नालन्दा), मो. : 9835616731, 8651613442

7/19

वधू चाहिए

Vikash Kumr, 31, 5' 10", B.Tech. (NIT), MBA (IIM) Calcutta from Asansol posted as Relationship Manager, ICICI in institutional banking in Singapore till Aug. 2019, needs well educated, mature, tall and good looking companion. Please contact Mr. Jaydev Pd. Burnwal, Mob. : 7076950276

4/19

वधू चाहिए

चेतन आनन्द, 29, 5' 9'', गेहुँआ, MBA, running own nursing home in Co-operative Colony, Bokaro & having own house at City Centre, B.S City के लिये सुन्दर, सुशील, शिक्षित एवं गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए। पिता स्व. ओमप्रकाश Ex-Chargeman of BSL, संपर्क करें : जीजाजी संजीव कुमार बरनवाल, बंगलोर, मो. : 9008244713, चेतन आनन्द, बोकारो मो. : 9431379684

6/19

वधू चाहिए

मयंक कुमार, 29, 5' 10'', स्मार्ट, CS+ CA (Inter), American International Group, गुड़गाँव में पदस्थापित हेतु सुयोग्य एवं सुन्दर (कम से कम 5' 3''), कार्यरत वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता मनोहर बर्णवाल, अरुण मेडिकल, फुसरो (बोकारो), मो. : 9886853216, 9031951645

7/19

वर चाहिए

26 वर्षीया, 5'3'', गौर वर्ण, स्नातक एवं NIOS से प्रशिक्षण प्राप्त, गृहकार्य दक्ष के लिए योग्य नौकरी पेशा या व्यवसायी वर चाहिए। संपर्क करे : कृष्णा प्रसाद बर्णवाल (पिता), बोधमन तालाब, जमुई। मो. : 8051220458, 7050191051

6/19

वर चाहिए

Sristi Baranwal, 24, 5' 5'', फेयर, मांगलिक, PG (MU) कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क करें : पिता बासुदेव प्रसाद, गया,मो0 : 7870530546, 9279061937

6/19

वर चाहिए

Akansha Kumari, 5' 3", DOB 25.01.1995, B.Tech. working in Wipro, Kolkata fair, slim & smart, D/o Nandkishore Baranwal of Gidhur (Jamui), Contact : 9939092813, Priority service in Kolkata.

Scanned by CamScanner

6/19

वर चाहिए

ब्यूटी विशाखा, 20.10.1994, 5' 5'', फेयर, B.Tech. (KIIT, Odissa), वर्तमान में Accenture, बंगलोर में Software Engineer हेतु हाय प्रोफाइल वर चाहिए। संपर्क करें : पिता बिजय लाल बरनवाल, न्यू रसाट कॉलेज, गिरीडीह, मो. : 8409339968, 8709672207

6/19

वर चाहिए

श्वेता भारती, 26, 4' 11'', बी.एड, गोरी, सुन्दर, सुशील, शाकाहारी हेतु वर चाहिए। शाकाहारी एवं सरकारी विभाग में कार्यरत को प्राथमिकता। संपर्क करें : पिता सुरेन्द्र कुमार बरनवाल, धनबाद। मो. : 8271318669, 9155379177

5/19

वर चाहिए

हिमानी प्रिया, DOB 20.02.95, 5' 2½", सुन्दर, स्मार्ट, ग्रेजुएट (D.U.), LDC इन्डियन नेमी, मुम्बई में प्रथम पदस्थापित (Oct.' 19) हेतु केन्द्रीय सेवारत सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क करें : पिता देवेन्द्र बरनवाल, ईसरी बाजार (गिरीडीह) मो, : 7762948617, 8210754821

7/19

वधू चाहिए

सुमित कुमार, 30, 5' 8'', गोरा, स्मार्ट, होटल मैनेजर अहमदाबाद में कार्यरत हेतु शिक्षित वधू चाहिए। मांगलिक को प्राथमिकता। फोटो एवं कुण्डली के साथ संपर्क करें : पिता सुरेन्द्र प्रसाद बर्णवाल, पो.+जिला : जमुई (बिहार), मो. : 8210158990

5/19

वर चाहिए

शिल्पी कुमारी, 28.1.1992, 5'4'', फेयर, B.A. (Hons. History), B.Ed. में अध्ययनरत (2017–19 सेशन) हेतु सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क करें : दिगम्बर मोदी, मिलन चौक, राजधनवार (गिरीडीह), मो. : 9798325739, 8084731425

7/19

वर चाहिए

Alliance invited for Shivangi Kumari, DOB 14.8.1990, fair, beautiful, well educated, M.Com 1st class from DSE (DU) & UGC NET qualified, presently working as Junior Accounts officer at BSNL, Katihar. Looking for a suitable well educated groom preferably Doctor, Engineer (ONGC, NTPC, NHPC, Rly.) or employed as class 1 or 2 officer in Central Govt. Contact with Bio-data to Shambhunath Shah, Retd. Manager, PNB, Purnia, Mob. : 9810645493, 9650784327, 7667352552

6/19

वर चाहिए

डा. रचना भारती, DOB 27.07.1987, 5' 3'', सुन्दर, गोरी, स्मार्ट, गृहकार्य दक्ष MPT (NEURO) IP university, Delhi में सिनीयर फिजियोथेपिस्ट के पद पर कार्यरत हेतु सुयोग्य व शिक्षित वर चाहिए। संपर्क करें : सुरेन्द्र प्रसाद, स्वस्तिक मेडिकल हॉल, झाझा (बिहार), मो. : 9990167831, 9158927766

5/19

वर चाहिए

शिल्पा, 31, 5' 2'', सुन्दर, स्मार्ट, B.Tech. (NIT), हैदराबाद में साफ्टवेयर कंपनी में प्रबंधक के पद पर 30 लाख/वर्ष के वेतन पर कार्यरत हेतु सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क करे : पिता शंकर राम, केन्द्रीय विद्यालय लखनऊ में वरिष्ठ गणित शिक्षक के रुप में कार्यरत। मो. : 8808770766, 8318831055

पत्नी : शाम को जल्दी घर आ जाना।

पति : क्यों, कुछ खास है क्या ?

पत्नी : मायके से रिश्तेदार आ रहे हैं।

पति : मेरा दिमाग मत खाओ, मैं बहुत बीजी हूँ। वैसे कौन–कौन आ रहे हैं।

पत्नी : मेरी दोनों छोटी बहनें आ रही हैं।

पति : डार्लिंग, तुम्हारे रिश्तेदार माने मेरे रिश्तेदार, टाइम से आ जाऊँगा।

Scanned by CamScanner

देश गौरव सुभाषचंद्र बोस

आनंद और चिंता

सितंबर सन् 1920 का अंतिम सप्ताह। कटक के वकील जानकीनाथ बोस अत्यंत प्रसन्न थे। उनका लाडला सुभाषचंद्र आय.सी.एस. की कठिन परीक्षा, चौथा क्रमांक पाकर उत्तीर्ण हुआ था। अभिमान के साथ वे सबसे कहते थे, "मेरा सुभाष बहुत बुद्धिमान है। प्रथम तो इस परीक्षा में बैठने का उसका मन नहीं था। जिस जहाज से वह निकला, वह दो मास देरी से लंदन पहुंचा। केवल सात मास की पढ़ाई के भरोसे उसने उत्तम यश प्राप्त किया। वह जिलाधीश बनेगा, उच्चतर पद पायेगा।"

जानकीनाथ यह सब कहते अवश्य थे, परन्तु उनका मन आशंकाओं से घिर भी जाता था। क्या सुभाष अंग्रेज अधिकारियों के सामने झुकेगा ? क्या वह अपने ध्येय तथा विचारों को बदलेगा ? सुभाष के पूर्वजीवन के कई प्रसंग उन्हें स्मरण हो आते। फिर वे चिंतामग्न हो जाते।

माता प्रभावती देवी ने मनौतियों को पूरी करते हुए समारोहों के साथ पूजा पाठ किया। वे सोचती – मेरे सुभाष को बहुत बड़ी तनख्वाह मिलेगी। मैं बड़े ठाठ से उसका विवाह करूँगी। परन्तु क्या वह नौकरी करेगा? वह तो बचपन से स्वाभिमानी और जिद्दी रहा है।

माता–पिता के मन की आँखों के सामने सुभाष के पूर्वजीवन के अनेक चित्र साकार होने लगे।

अन्याय का विरोध

सुभाष का जन्म कटक नगर में 23 जनवरी 1897 को हुआ। जब वह पांच वर्ष का हुआ तब उसे 'प्रोटेस्टंट यूरोपियन स्कूल' में भरती किया गया। उस पाठशाला में अंग्रेज लड़के भी पढ़ते थे। वे भारतवासी विद्यार्थियों को गालियां देते तथा उन्हें मारते।

एक दिन मध्यावकाश में, अंग्रेज बच्चे मैदान में खेल रहे थे। सब स्वदेशी विद्यार्थी पेड़ के नीचे बैठे थे। सुभाष ने उन्हें पूछा, 'क्या तुम्हें खेलना नहीं भाता ?'

उन्होंने कहा 'भाता तो बहुत है, परन्तु वे हमें मैदान में नहीं आने देते।'

यह सुनकर सुभाष ने कहा, "क्या, ईश्वर ने तुम्हें हाथ नहीं दिये है ? क्या तुम गोबर मिट्टी के बने हो ? निकालो गेंद।"

बच्चे पहले तो कुछ झिझके परन्तु जब सुभाष ने गेंद उछाली तब सब दौड़ पड़े। अंग्रेज बच्चे उन्हें रोक न सके। दो दलों में घमासान झगड़ा हुआ। भारतीयों ने अंग्रेजों को खूब पीटा। शिक्षक दौड़ पड़े। प्राचार्य आये। सीटियाँ बजी। प्राचार्य ने कुछ समझाया, कुछ डाँटा। सब अपनी कक्षाओं में गये।

चौथे दिन अंग्रेज बच्चों ने योजना बनाकर आक्रमण किया। सुभाष के नेतृत्व में भारतीयों ने उनकी खूब पिटाई की। प्राचार्य ने जानकीनाथ बोस को चिट्ठी लिखी – 'आपका पुत्र पढ़ाई में उत्तम है परन्तु वह गुट बनाकर मारपीट करता है, उसे समझाइये।'

पिता जी ने सुभाष को बुलाकर पूछा। पूरी घटना सुनाने के बाद उसने कहा, 'आप भी प्राचार्य जी को चिट्ठी लिखें कि आप अंग्रेज बच्चों को समझाइये। यदि वे गालियाँ देंगे और मारेंगे तो हम करारा जवाब देंगे।'

आग बिजली और तूफान

सन् 1907 की बात है। सुभाष के मामा उसे कलकत्ता ले गये। तीन ही दिनों में वापस आकर मामा ने बहन से कहा, 'संभालो अपना लाडला।'

प्रभावती देवी ने पूछा, 'क्यों ? क्या हुआ ?'

मामा ने कहा, 'क्या नहीं हुआ सो पूछो। हमारे कलकत्ता पहुँचने के पूर्व दिन वहां एक सनसनीखेज घटना हुई। पन्द्रह वर्ष के सुशील कुमार सेन ने हट्टे–कट्टे अंग्रेज सार्जन्ट को बहुत मारा। किंग्जफोर्ड ने उसे पन्द्रह बेंत मारने की सजा सुनाई। वह सब सुनकर सुभाष ने एक ही जिद पकड़ी, 'मामा जी, मुझे न मिठाई खानी है न कपड़े खरीदने हैं, मुझे तो सुशील कुमार सेन के दर्शन करने हैं।' जहां सुशील कुमार को बेंत मारे जाने वाले थे, वहां मैं इसे ले गया। चारों ओर भीड़ थी। उसे चीरकर सुभाष आगे जा खड़ा हुआ। हर मार के साथ सुशील कुमार गरजता था,

Scanned by CamScanner

जाये भारत्!' इधर सुभाष काबू से बाहर हो रहा था। बड़ी मुश्किल से मैं उसे वहां से निकाल सका। लो संभालो इसे। इसमें आग, बिजली और तूफान, तीनों एकत्र हो गये हैं।'

जीवन के आदर्श

कलकत्ता से आने के बाद सुभाषचंद्र एक पुस्तिका में क्रांतिकारियों के चित्र चिपकाने लगा। नानासाहब पेशवा, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई से लेकर, वासुदेव बलवंत, चाफेकर बंधु, प्रफुल्लचंद्र चाकी, खुदीराम बोस आदि के चित्र उसमें थे। ऊपर लिखा था – 'मुझे ऐसा ही जीना है,' 'मुझे ऐसा ही मरना है।'

एक बार जानकीनाथ के रिश्तेदार पुलिस अधिकारी, उनके घर आये। उनके हाथ वह चित्र संग्रह पड़ा। उन्होंने उसे जानकीनाथ को दिखाते हुए कहा, 'तुम स्वयं शासकीय पद चाहते हो, बच्चों के लिए ऊँची नौकरियां चाहते हो और तुम्हारे घर में यह क्या पक रहा है ? इसे घर में न रखो।'

उस पुस्तिका को जला दिया गया। सुभाष के घर आने पर उसे यह ज्ञात हुआ। वह फूट–फूटकर रोने लगा। दो दिन उसने कुछ भी नहीं खाया।

निश्चयी विद्यार्थी

जनवरी सन् 1909 में सुभाषचंद्र रेव्हनशा कॉलेजिएट स्कूल में भरती हुआ। अब तक के यूरोपियन स्कूल में बंगला का नाम तक नहीं था। रेव्हनशा में बंगला भाषा आवश्यक विषय था। छः माही परीक्षा में 'गाय' पर निबंध आया। सुभाष ने बीस पंक्तियाँ लिखीं। उनमें पचास गलतियां थी। शिक्षक ने उस निबंध को कक्षा में पढ़ा। विद्यार्थी खूब हंसे। सब विषयों में सुभाष को अच्छे गुण थे, परन्तु बंगला में वह अनुत्तीर्ण रहा। उसने तुरन्त ही बंगला का अभ्यास करने का निश्चय किया। वार्षिक परीक्षा में बंगला में उसे सर्वाधिक गुण प्राप्त हुए। शिक्षक ने उसे बहुत शाबासी दी।

इस विद्यालय में वेणीमाधव नाम के ऋषितुल्य शिक्षक थे। उनका जब तबादला हुआ तब सुभाष बहुत रोया। पत्र द्वारा उसने उनसे संबंध रखा। वे भी अपने पत्रों से, सुभाष को नई प्रेरणा देते थे। एक बार उन्होंने लिखा, प्रकृति की शरण में जाओ। चेतनामय प्रकृति के समान मनुष्य का न कोई मित्र है न मार्गदर्शक। सृष्टि के दृश्य केवल नयनाभिराम ही नहीं है। वे अन्तरात्मा में नये सामर्थ्य का संचार करते है।

सुभाषचंद्र प्रति संध्या समय नदी के किनारे जा बैठता था। डूबते हुए सूर्य को वह टकटकी लगाकर देखता था। चारों ओर की शान्ति वह हृदय में भर लेता था।

अन्तरंग

सुभाष के भाई उच्च शिक्षा के लिये कलकत्ता रहने लगे। मां उनके पास रहने लगी। सुभाष माता को पत्र लिखता था। उनमें इस प्रकार के विचार रहते थे। ''–जो भी प्राप्त करें वह सब हम श्रीहरि के चरणों में समर्पित करें। मनुष्य और पशु में एक अन्तर है। पशु ईश्वर की न कल्पना कर सकते हैं, न प्रार्थना।

मुझे श्रद्धा चाहिये। परमेश्वर के सर्वसामर्थ्य संपन्न स्वरुप पर मुझे श्रद्धा रखनी होगी। श्रद्धा से भक्ति प्राप्त होती है और भक्ति से ज्ञान –

पुष्प वाटिका में प्रतिदिन नये फूल खिलते हैं। उसी प्रकार मेरे मन में नित्य कई कल्पनाएं उमड़ती हैं। इन मानसिक आविष्कारों को मैं तुम्हारे चरणों में चढ़ाता हूं। ये सब तुम्हें सुगंधि के समान सुख देते हैं या कांटों के समान कष्ट ? मां, तुम मेरी निकटतन आत्मीय हो इसीलिए मैं तुम्हें बार–बार चिठ्ठिया लिख अन्तरंग से अवगत करता हूं।

इस युग में परमेश्वर ने बाबू लोग नाम की अद्भुत वस्तु उत्पन्न की है। ईश्वर ने हमें भले चंगे पैर दिये हैं परन्तु हम चालीस पचास मील चल नहीं सकते क्योंकि हम बाबू हैं। हमारे दो हाथ भी हैं। परन्तु उनका उपयोग करने में हमें लज्जा आती है क्योंकि हम बाबू हैं। ईश्वर ने हमें धृष्टपुष्ट शरीर दिया है परन्तु हम कष्टों से जी चुराते हैं। हम आलसी और अकर्मण्य बने हैं। जन्मे ऊष्ण प्रदेश में हैं परंतु हम गरमी से घबराते हैं और जाड़े के दिनों में लबादा ओढ़कर हु–हु–हु कहकर बैठे रहते हैं क्योंकि हम बाबू हैं।

हम मनुष्याकार पशु नहीं, पशु से भी गये बीते हैं। बुद्धि होते हुए हम उसका उपयोग नहीं करते। हम सुखासीन और विलासी बन, अपनी क्षमताएं, खो बैठे हैं।''

Scanned by CamScanner

सुभाष का पत्र आते ही सब भाई उस पर टूट पड़ते। फिर उसका सामूहिक वाचन होता था और खूब चर्चा छिड़ती थी। सतीश कहता, 'पन्द्रह वर्ष की आयु में इसे खाने पीने, खेलने में मग्न होना चाहिए। शरद कहता, गगन को छूनेवाले विचार और सुडौल भाषाशैली, यह सब इसने कहां से पाया ? सुरेश कहता, कोई महात्मा इसे हिमालय न ले जाय, इन उद्‌गारों को सुन प्रभावती देवी का मन कांप उठता। कलकत्ता आने पर जानकीबाबू भी उन पत्रों को पढ़ते थे। वे कहते, 'इतने प्रौढ और सुंदर विचार ! कोई गत जन्म का सिद्ध महात्मा हमारे घर जन्मा है।''

ध्यानधारणा

एक दिन सुभाष विवेकानंद ग्रंथावलि ले आया। वह उसका पठन मनन करने लगा। अपने पाठय पुस्तकों पर वह 'आत्मनो मोक्षार्थ जगद्धितायच' लिखने लगा। कटक के अनेक विवेकानंदप्रेमी उसने जुटाये। वे सब एकान्त स्थान में ध्यान, पठन, भजन करते।

सुभाष घर के कोने में आँखें मूंदकर घंटों बैठा रहता। कभी वह वन में चला जाता। सब सुभाष के भविष्य की चिन्ता करने लगे।

मार्च 1913 में उसने मैट्रिक की परीक्षा दी। सुभाष को किसी ने पढ़ते हुए नहीं देखा था। वह अपनी उत्तर पुस्तिका समय से बहुत पूर्व शिक्षक को थमा देता था। सब उसके बारे में निराश थे। परन्तु सुभाष प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। सम्पूर्ण प्रान्त में उसका दूसरा क्रमांक आया।

सेवाकार्य

सुभाष अब कलकत्ता के प्रेसिडेन्सी कॉलेज में जाने लगा। कलकत्ता के 'नवविवेकानंद समूह' का वह सदस्य बना। विवाह न करने की तथा दीनदुखियों की सेवा करने की उसने शपथ ली। आध्यात्मिक उन्नति और सामाजिक सेवा को प्रत्यक्ष में लाने हेतु वह प्रयोग करने लगा।

उसके निवास स्थान के सामने एक वृद्ध भिखारिन बैठती थी। उसके बाल सफेद थे। चेहरे पर झुर्रियाँ थीं। वह चिथड़े पहनती थी। सुभाष ने सोचा, मुझे इसे कुछ देना चाहिए। परन्तु पिताजी के भेजे पैसे नहीं, स्वयं के कष्ट के पैसे।

प्रेसिडेन्सी कॉलेज तीन मील दूर था। सुभाष वहां ट्राम से जाता आता था। उसने पैदल जाना शुरु किया और ट्राम के किराये पैसे वह प्रतिदिन बूढ़ी भिखारिन को देने लगा। पिताजी को जब यह ज्ञात हुआ, तब उन्होंने अपना माथा ठोक लिया।

'समूह' के सदस्यों ने आठ दिनों का शिविर रखा। सब ने भगवा कपड़े पहने और झोली हाथ में लिये। धान्य जुटाया। इस शिविर में मेडिकल कालेज के छात्र भी थे। उनमें से केशव बलिराम हेडगेवार के साथ सुभाष का विशेष स्नेह संबंध प्रस्थापित हुआ। सुभाष और केशव हेडगेवार ने अनेक बार कंधे से कंधा भिड़ाकर सेवा कार्य किया। बाढ़, हैजा, अकाल आदि आपत्तियों से लड़ते-लड़ते देश की वास्तविक परिस्थिति का उन्हें दर्शन हुआ। सर्वत्र दारिद्रय, दैन्य, अज्ञान, अकर्मण्ता, आलस्य तथा भीरुता का राज्य था। कौन इसे बदलेगा ? यह प्रचण्ड कार्य कौन करेगा ? ऐसे प्रश्न उनके हृदयों को कचोटने लगे।

सद्‌गुरु की खोज

सन् 1914 के मई मास में सुभाषचंद्र मित्र हरिपाद चट्टोपाध्याय के साथ गुरु की खोज में निकल पड़ा। न घर में बताया न पैसे लिये। ऋषिकेश से वाराणसी तक अनेक तीर्थ क्षेत्रों में वे गये। जटाजूट, भगवी कफनी, धुनी आदि देखकर वे माथा नमाते रहे। निराश हो, आगे बढ़ते रहे।

25 दिनों बाद सुभाष कलकत्ता आ पहुंचा। शरद दा उसे कटक ले आये। उसे देख प्रभावती देवी दौड़ पड़ी। गले लगाकर रोने लगी। पास बैठाकर उन्होंने कहा, ''क्या अपनी मां को केवल कष्ट देने के लिए ही तुम जन्मे हो ?''

पिताजी की आंखों से अविरत अश्रुधारा बहने लगी। उनके पूछने पर सुभाष ने पूरा वर्णन सुनाया। पिताजी ने कहा, ''तुम वापस आ गये, हम सब कुछ पा गये।''

इसके बाद सुभाष को टाइफाइड हुआ। कई दिनों तक वह बिस्तर पर रहा। जनवरी 1915 में उसने इंटरमीडियट की परीक्षा दी। वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ।

माफी नहीं मांगूंगा

10 जनवरी 1916 की बात है। प्राध्यापक ओटन ने एक विद्यार्थी को भद्दी गालियां दी और धक्का मारा।

Scanned by CamScanner

सुभाष उसे लेकर प्रिंसिपल जेम्स के पास गया। विद्यार्थी ने पूरी आपबीती सुनाई। सुभाष ने प्रिंसिपल से कहा, "प्राध्यापक ओटन विद्यार्थियों से हमेशा ही बुरा व्यवहार करते हैं। विद्यार्थियों की सभा में उन्हें खेद प्रकट करना चाहिए।"

जेम्स ने कहा, "ऐसा कभी नहीं होगा।"

विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी। एक दिन ओटन स्वयं विद्यार्थी सभा में उपस्थित हुए। उन्होंने कहा, "जो हुआ सो भूल जाओ।" विद्यार्थियों ने तालियां पीटीं। कालेज पूर्ववत् चलने लगा। परन्तु पन्द्रह दिनों बाद ओटन ने फिर से एक विद्यार्थी पर हाथ चलाया। विद्यार्थियों ने वहीं उन्हें घेरा और उनकी पिटाई की।

प्रिंसिपल ने सुभाष को बुलाकर कहा, "इस सब की जड़ में तुम हो, तुम माफी मांगो।"

सुभाष ने कहा, "मैं क्यों माफी मांगू ? कसूर तो प्राध्यापक ओटन का है और उन्हें काबू में न रखनेवाले आपका है।"

प्रिंसिपल ने कड़ककर कहा – "मैं तुम्हें कॉलेज से निकाल देता हूं।"

सुभाष ने कहा – "धन्यवाद"।

स्वेच्छा सेवा संघ

सुभाष कटक में रहने लगा। उसने अपने मित्रों को जुटाया और 'स्वेच्छा सेवा संघ' स्थापित किया। कटक के आसपास के गांवों में जाकर इस संघ ने बहुत सा सेवाकार्य किया। फिर सुभाष ने अपने साथियों से कहा, "हमारा कार्य केवल प्रासंगिक न रहे। हम उसे स्थायी रुप देंगे। हमारी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक, तीनों प्रकार की उन्नति होनी चाहिये।"

वसतिगृह के मैदान में प्रति शाम को युवक जुटने लगे। वे नित्य नियम से व्यायाम, खेल, चर्चा, व्याख्यान आदि करने लगे। सुभाष अनेक विषयों पर अभ्यासपूर्ण भाषण देता था।

एक साल बीत गया। कलकत्ता की परिस्थिति बदल गई। सुभाष को स्काटिश मिशन कॉलेज में प्रवेश मिला। वहां उसने विश्वविद्यालय के चातुर्मासिक सैनिक शिक्षा शिविर में भाग लिया।

बंदूक चलाना, घुड़सवारी, कवायत् आदि बातें उसने सीख लीं।

मार्च सन् 1919 में सुभाष ने बी.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। उसका द्वितीय क्रमांक आया।

आय.सी.एस. का त्याग

सुभाष के पूर्व जीवन के ऐसे सारे प्रसंग जानकी बाबू तथा प्रभावती देवी की आंखों के सामने आने लगे। उनके मन में तरह-तरह की शंकाएँ उठी – आये दिन अंग्रेज अधिकारी अधिकाधिक उन्मत्त हो रहे हैं। सुभाष का किसी उदण्ड अंग्रेज से पाला पड़ा तो ? हे राम, मेरे सुभाष का क्या होगा ? अंग्रेजों के साथ उसकी कैसे निभेगी ?

उन्हें शीघ्र ही पता चला कि सुभाष ने आय.सी.एस. से त्याग पत्र दे दिया। मित्र-रिश्तेदार सभी चकित हुए। आय.सी.एस. याने उच्च पद, मोटी तनख्वाह, ऐश्वर्य और रौबदौब। भारत में और इंग्लैण्ड में जिस आय.सी.एस. के लिए हजारों युवक लार टपकाते थे, उसे सुभाष ने जीवन से निकाल बाहर कर दिया।

अपने भाई शरद को उसने लिखा, "मैं भला अंग्रेजों की कभी सेवा कर सकता हूं ? असंभव। क्रूर-निर्दयी-अन्यायी अंग्रेजों का, जालियांवाला बाग के रक्तपात के पापियों का, क्या मैं कभी साथ दे सकता हूं ? क्या मैं स्वदेश का शत्रु बन सकता हूं ? असंभव। यदि सब लोग घरौंदों में मशगुल हो जाए, तो देश की चिंता कौन करेगा ? मां की पुकार रातदिन मेरे कानों में गूंज उठती है – 'धाओ धाओ समरक्षेत्रे' – परतंत्र राष्ट्र का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह स्वातंत्रय प्राप्ति तक अखण्ड लड़ता रहे। स्वतंत्रता संग्राम का सैनिक बनने हेतु मैंने आय.सी.एस. का त्याग किया है।"

विविध कार्यों में अग्रसर

भारत आकर सुभाषबाबू 16 जुलाई 1921 को बम्बई में गांधीजी से मिले। फिर कलकत्ता पहुंचकर देशबंधु चित्तरंजन दास के चलाये राष्ट्रीय स्वयंसेवक दल के वे प्रमुख कार्यकर्ता बने। कुछ समय तक वे नेशनल कॉलेज के प्रिंसिपल रहे। "बांगलार कथा' और 'फारवर्ड' के वे

Scanned by CamScanner

संपादक बने। 'युगान्तर' और 'अनुशीलन' इन दो क्रांतिकारी गुटों में समन्वय प्रस्थापित करने का उन्होंने भरसक प्रयास किया।

इंग्लैण्ड का राजपुत्र भारत आया। कांग्रेस ने बहिष्कार पुकारा। कलकत्ता में सर्वत्र उसे काले झण्डे दिखाये गये। अंग्रेजी सरकार ने प्रमुख नेताओं को जेल में ठूंसा। न्यायाधीश ने सुभाष को छह मास की सजा सुनाई। सुभाष ने उसे कहा, "बस ! छह मास ! किसी की मुर्गी चुराने पर 6 मास की सजा दी जाती है। मैं तो अंग्रेजों का तख्त पलटने जा रहा हूं।"

धुरंधर कार्यकर्ता

सन् 1924 में देशबंधु दास कलकत्ता के महापौर बने। सुभाष महानगरपालिका के कार्यकारी अधिकारी बने। पालिका में अनेक अधिकारी अंग्रेज थे। उन्होंने सोचा, एक तो यह एक पदार्थ भारतीय, फिर अनुभवहीन छोकरा, इसे हम चूं ही वश कर लेंगे।

दूसरे ही दिन इंजीनियर कोट्स सिगरेट पीते हुए कार्यालय में आये। सुभाषचंद्र ने कड़ी आवाज में कहा, "क्या आप इसे शिष्टाचार मानते हैं ? क्या आपके कनिष्ठ आपके साथ ऐसा ही व्यवहार करें ?"

श्रीमान् कोट्स ने उसी समय सिगरेट बुझाई और क्षमायाचना की। सुभाष का प्रभाव बढ़ा। अंग्रेज सरकार ने 25 अक्टूबर 1924 को उन्हें गिरफ्तार कर अलीपुर, बेहरामपुर आदि स्थानों पर रखने के बाद, मण्डाले पहुंचाया। वहां की खराब हवा में वे बारबार बीमार हुए। परन्तु पढ़ाई, चिंतन, मनन, ध्यानधारणा में वे मग्न रहते थे।

अपने मित्र दिलीप कुमार राय को उन्होंने लिखा, "प्रफुल्ल गुलाब के फूलों के लिए हमें कांटों का भी स्वागत करना होगा। ऊषा की शोभा यदि हमें देखनी है, तो हमें घनी अंधेरी रात धैर्यपूर्वक बितानी होगी। स्वतंत्रता का आनंद प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें उसकी पूरी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

जेल में सुभाष जी ने उपोषण किया। समाचार पत्रों ने हो-हल्ला मचाया। प्रान्तिक विधान सभा के चुनाव हुए। जनता ने जेल में बन्द सुभाष को ही विजयी बनाया। उनका स्वास्थ्य जब अधिक बिगड़ा तब सरकार ने कुछ शर्तों पर छोड़ने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने उसे ठुकरा दिया। भाई को उन्होंने लिखा –

"मेरा मन शान्त है। प्रभु की जो भी योजना होगी उसे स्वीकार करने के लिए मैं सिद्ध हूं। मेरे प्रियतम स्वप्न भावी पीढ़ियों को विरासत के रूप में प्राप्त होंगे। यह श्रद्धा ही यातनामय मार्ग में मुझे प्रेरणा देती है।"

सुभाष बाबू का बुखार हटा नहीं। वे बेहोश होने लगे। सरकार ने सोचा इनकी मृत्यु समीप है। एक दिन चुपचाप सरकार ने उन्हें उनके घर पहुंचा दिया।

उनके भाईयों ने चार मास तक उन्हें शिलांग आरोग्यधाम में रखा। कुछ ठीक होते ही वे विभिन्न कार्यों में जुट गये। वे बंगाल प्रान्तिक कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। 1 जनवरी 1928 को उन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस का सह-सचिव पद प्राप्त हुआ। वे देशभर में घूम कर जनजागरण करने लगे।

शेष अगले अंक में

बधाई

अत्यन्त गौरव की बात है कि बरहज नगर की प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान 'सरोजनी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय' बरहज के प्रबंधक पर श्री जर्नादन प्रसाद जी बरनवाल का चयन हुआ है। इसके अतिरिक्त आपका चयन 'बाबा राघव दास भगवान दास महिला महाविद्यालय' बरहज में कोषाध्यक्ष पद पर तथा 'श्री कृष्ण इन्टर कॉलेज, आश्रम – बरहज' एवं 'परमहंसानन्द शिक्षा मन्दिर, आश्रन-बरहज' में प्रबंध समिति के सदस्य पद को आप सुशोभित कर रहे हैं।

'बरनवाल सेवा समिति, बरहज' श्री जर्नादन प्रसाद बरनवाल के प्रति सम्मान प्रकट करने के साथ ही असीम शुभकामनाएँ एवं बधाई प्रेषित करती है।

सन्तोष कुमार बरनवाल
मंत्री, बरनवाल सेवा समिति
बरहज बाजार, देवरिया

Scanned by CamScanner

बादाम इलायची कुल्फी

सामग्री – दूध 2 कप, बारीक कटा बादाम 1/4 कप, कस्टर्ड (पेनीला) पाउडर 2 चम्मच, कंडेस्ड मिल्क 200 ग्राम, क्रीम 3/4 कप, बादाम पाउडर 1 कप, इलायची पाउडर 1 चम्मच।

विधि – एक पैन में दूध डालें और मध्यम आच पर पकाएं। जब दूध गर्म हो जाए तो उसमे कस्टर्ड पाउडर डालकर घुलने तक मिलाएं। दूध को लगातार मिलाते हुए पकाएं। जब दूध गाढ़ा होने लगे तो उसमें बादाम डाले। जब दूध कस्टर्ड जितना गाढ़ा हो जाए तो गैस बंद दें। जब यह मिश्रण ठंडा हो जाए तो उसमें कंडेंस्ड मिल्क, बादाम पाउडर, इलायची पाउडर और क्रीम डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। अब इस मिश्रण को कुल्फी के सांचे में डालें और फ्रीजर में रखकर दस से बारह घंटे तक जमाएं और पेश करें।

क्रीमी मैंगो कुल्फी

सामग्री – आम की प्यूरी 1 कप, कटा हुआ पका आम 1 कप, क्रीम चीज 400 ग्राम, फेंटा हुआ क्रीम 250 ग्राम।

विधि – क्रीम चीज को ग्राइंडर में डालकर अच्छी तरह से फेंट लें। अब उसनें क्रीम डालें और अच्छी तरह से मिलाएं। अब ग्राइंडर में मैंगो प्यूरी डालें और घार से पांच निनट तक फेंटें। सबसे अंत में आम के टुकड़े डालें और कुछ सेकेंड तक फेंटें। अब इस निश्रण को कुल्फी के सांचे में डालें और 10 से 12 घंटे तक फ्रीजर में जमाएं और सर्व करें।

अवधी करेले का दुलमा

सामग्री – करेला 2, दही 3 चम्मच

भरने के लिए मसाला – बारीक कटा प्याज 3, बारीक कटा लहसुन 6 कली, धनिया पाउडर 1 चम्मच, हल्दी पाउडर 1 चम्मच, अमचूर पाउडर 1 चम्मच

पेस्ट बनाने के लिए – कलौंजी 2 चम्मच, शाही जीरा 2 चम्मच, रात में भिंगोया काजू बादाम 6, नमक स्वादानुसार, तेल आवश्यकतानुसार।

विधि – करेले को अच्छी तरह से धो लें और दोनों सिरों से काटकर बीच में से सारे बीज निकाल लें। कुकर में करेला, दो–चार चम्मच पानी और हल्का–सा नमक डालें। एक सीटी लगाएं और कुकर का प्रेशर अपने–आप निकलने दें। इस बीच एक तवे पर कलौंजी, नेथी के दाने, काजू और बादाम को सूखा भून ले और मिक्सर ग्राइंडर मे पीस लें। कड़ाही नें तेल गर्म करें और उसमें अदरक, लहसून, प्याज व हरी मिर्च डालें। प्याज के नरम होने तक पकाएं। अब इसमें कलौंजी वाले मिश्रण का पाउडर भी डालें और अच्छी तरह से मिलाकर 30 सेकेंड तक पकाएं। गैस बंद करें और मिश्रण को हल्का ठंडा होने दें। जब मिश्रण हल्का ठंडा हो जाए तो उसे उबले हुए करेले में अच्छी तरह तरह से भर दें। पैन में दो चम्मच तेल और गर्म करें और उसमें ये भरे हुए करेले डालें। मध्यम आंच पर करेले को सुनहरा होने तक भूनें। अब पैन में बचा हुआ मिश्रण और दही डालें हल्के हाथों से मिलाएं ताकि करेला टूटे नहीं। पैन को ढक दें और धीमी आंच पर चार से दो मिनट तक पकाएं। पराठा और रायते के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

– संकलित

Scanned by CamScanner

IITians HUB

Hub of Advanced Coaching

(ONLY IITIAN FACULTIES)

TARGET
JEE MAINS, ADVANCED

XI, XII
CBSE / ICSE / STATE

Free Demo Classes
From 25th March Onwards

Admissions Open

Mr. GAURAV BARANWAL
Director and HOD Physics
B. Tech IIT Dhanbad
Ex. Tata Motor Limited
5yrs Teaching Exp.

FOR MORE DETAILS VISIT OUR CENTER

Center :
IITIAN HUB
1st Floor, Radha Swami Arcade
Saraidhela, Dhanbad
Contact : 8877589749, 7992217886

12/19

Scanned by CamScanner